सांध्य दैनिक
4PM
जिद...सच की
www.4pm.co.in www.facebook.com/4pmnewsnetwork @Editor_SanjayS YouTube @4pm NEWS NETWORK
● वर्ष: 11 ● अंक: 152 पृष्ठ: 8 ● लखनऊ, सोमवार 7 जुलाई, 2025
मूल्य ₹ 3/-

जो अपना दिमाग नहीं बदल सकते वे कुछ भी नहीं बदल सकते।
-जार्ज बर्नार्ड शा

डब्ल्यूटीसी के नए चक्र में भारत का... 7 | मतदाता सूची गहन पुनरीक्षण या... 3 | आरक्षण खत्म करने की कोशिश... 2

बिहारी सियासत में चिराग भड़काएंगे आग!

पल-पल बदल रहे हैं बिहार के राजनीतिक समीकरण

एनडीए में बिखराव, तेजस्वी को मिली चिराग की आग से ठंडी राहत

» पशुपति पारस ने भी बनाई अपनी नई राजनीतिक पार्टी
» पीके पहले से ही मेहनत कर बिहार की राजनीति में कुछ नया करना चाहते हैं

4पीएम न्यूज़ नेटवर्क

पटना। बिहार की सियासत में पक रही बिरयानी का स्वाद पल–पल बदल रहा है। एनडीए घटक के स्वादिष्ट सियासी मसालों में से एक चिराग पासवान के बागवती तेवर बिरयानी को कसैला बना रहे हैं। चिराग पासवान ने एक चुनावी रैली में बिहार की सभी 243 सीटों पर चुनाव लड़ने का एलान कर दिया है। उन्होंने कहा है कि वह प्रत्येक सीट पर चिराग पासवान बन कर चुनाव लड़ेंगें।

उन्होंने सनसनी फैलाते हुए कहा कि कुछ लोग नहीं चाहते कि वह बिहार आये लेकिन अब ऐसा नहीं होगा और वह बिहार की राजनीतिक करेंगे। उनके चाचा पशपति पारस भी नये तेवरों के साथ मैदान में हैं। पशुपति भी एनडीए का हिस्सा थे लेकिन चिराग के आने से एनडीए ने उनसे किनारा कर लिया था।

याद कीजिए वर्ष 2020 का विधानसभा चुनाव जब चिराग पासवान ने एनडीए के भीतर रहकर ही नीतीश कुमार के खिलाफ मोर्चा खोल दिया था। परिणामस्वरूप जदयू की सीटें आधी हो गईं। इस बार फिर चिराग ने एक नया मोर्चा खोला है। एनडीए आलांयस होन के बाद भी उन्होंने बिहार विधानसभा की सभी सीटों पर चुनाव लड़ने का एलान कर दिया है। उनके इस एलान को एनडीए में बिखराव के तौर पर देखा जा रहा है वहीं राजद नेता तेजस्वी को मनोवैज्ञानिक बढ़त मिल रही है।

अब चिराग पासवान ने सभी सीटों पर चुनाव लड़ने का किया एलान

'मैं बिहार में सक्रिय राजनीति में आ रहा हूं'

लोक जनशक्ति पार्टी रामविलास के नेता और सांसद चिराग पासवान ने छपरा के राजेंद्र स्टेडियम में एक जनसभा को संबोधित करते हुए बड़ा एलान कर दिया है। उन्होंने कहा है कि वह बिहार की सभी 243 सीटों पर चुनाव लड़ेंगें। चिराग ने कहा है कि उन्हें बार–बार बिहार आने से रोका जाता है। उन्होंने कहा कि मैं आपसे कहता हूं मैं बिहार में विधानसभा का सभी 243 सीटों पर चुनाव लड़ूंगा। हर सीट पर चिराग पासवान बनकर लड़ूंगा। चिराग पासवान ने कहा कि कुछ लोग यह चाहते हैं कि वह बिहार ना आए और केंद्र की ही राजनीति करें लेकिन मैं बिहार में सक्रिय राजनीति में आ रहा हूं।

चिराग के चुनाव लड़ने से बीजेपी को फायदा या नुकसान?

चिराग के इस एलान से बीजेपी गठबंधन को फायदा हो गया फिर राजनीतिक नुकसान। राजनीतिक विषलेशक ए एन तिवारी कहते हैं कि पासवान वोट बैंक अभी भी बिहार में 4-5 फीसदी तक ठोस प्रभाव रखता है। दलितों में चिराग का असर शहरी क्षेत्रों से लेकर ग्रामीण सीटों तक फैला है। तेजस्वी को काउंटर करने के लिए भाजपा को एक युवा चेहरा चाहिए और चिराग वैसा चेहरा हैं। लेकिन चिराग अगर बगावती अंदाज में सभी सीटों पर उम्मीदवार उतारते हैं तो ये एनडीए को झारखंड में 2019 जैसी हालत में पहुँचा सकता है जहाँ आंतरिक बगावत के कारण गठबंधन हार गया था।

अलग पक रही है प्रशांत किशोर की खिचड़ी

दूसरे राजनीतिक दलों के लिए पिच तैयार करने वाले राजनीतिक चाणक्य प्रशांत किशोर की अपनी अलग खिचड़ी पक रही है। बिहार विधानसभा चुनाव में इस बार वे खुद के लिए खेल रहे हैं किसी अन्य पार्टी के लिए नहीं। उन्होंने जन सुराज यात्रा के ज़रिए गाँव-गाँव जाकर जमीन तैयार की है। पीके कांग्रेस,भाजपा और आरजेडी के बरअक्स एक नई प्रकार की राजनीति कर रहे है।

चिराग ने उठाया बिहार में अपराध का मुद्दा

कभी खुद को पीएम मोदी का हुनमान बताने वाले चिराग के सुर विधानसभा चुनाव में बदल गये हैं। उन्होंने खुद सीएम नीतिश की सरकार पर अपराध को लेकर हमला बोला और कहा कि बिहार में अपराध बड़ रहे हैं। चिराग ने कहा कि वह सुशासन की सरकार के साथ हैं। उन्होंने कहा? अगर सुशासन की सरकार में हत्याएं होंगी तो हम इसका खुलकर विरोध करेंगे।

चुनाव आयोग को 'सुप्रीम' नोटिस जारी

» बिहार में वोटर लिस्ट पुनरीक्षण अभियान मामला शीर्ष अदालत पहुंचा
» सुप्रीम कोर्ट 10 जुलाई को करेगा सुनवाई

4पीएम न्यूज़ नेटवर्क

नई दिल्ली। बिहार में मतदाता सूची की जांच और सुधार के मसले पर सुनवाई के लिए सुप्रीम कोर्ट तैयार हो गया है। कोर्ट ने चुनाव आयोग को नोटिस जारी किया है। गुरुवार (10 जुलाई, 2025) को मामले पर सुनवाई होगी। कोर्ट में दाखिल याचिकाओं में कहा गया है कि चुनाव आयोग के स्पेशल इंटेंसिव रिवीजन (विशेष सघन पुनरीक्षण) अभियान के चलते लाखों लोगों का नाम वोटर लिस्ट से हट जाने की आशंका है। इस मामले में अब तक 5 याचिकाएं सुप्रीम कोर्ट में दाखिल हो चुकी हैं।

ये याचिकाएं एनजीओ एसोसिएशन फॉर डेमोक्रेटिक रिफॉर्म्स (एडीआर), सामाजिक कार्यकर्ता योगेंद्र यादव, टीएमसी सांसद महुआ मोइत्रा, आरजेडी सांसद मनोज झा और बिहार के पूर्व विधायक मुजाहिद आलम ने दाखिल की हैं। याचिकाकर्ताओं ने चुनाव आयोग के आदेश को मनमाना और निष्पक्ष चुनाव को प्रभावित करने वाला बताया है।

सीनियर एडवोकेट कपिल सिब्बल कर रहे हैं पैरवी

सोमवार (7 जुलाई, 2025) को सीनियर एडवोकेट कपिल सिब्बल समेत कुछ अन्य वकील याचिकाकर्ताओं की तरफ से जस्टिस सुधांशु धुलिया और जस्टिस जोयमाल्या बागची की अवकाशकालीन बेंच के सामने

पेश हुए। उन्होंने कहा कि बिहार के 8 करोड़ मतदाताओं की जांच इतने कम समय मे संभव नहीं है. जो भी लोग फॉर्म नहीं भर पाएंगे, उनका नाम मतदाता सूची से बाहर हो जाएगा. इस प्रक्रिया पर तुरंत रोक जरूरी है. इस पर कोर्ट ने गुरुवार को सुनवाई के लिए सहमति दे दी।

याचिकाकर्ताओं को कुछ दस्तावेजों के मांगने पर आपत्ति

याचिकाकर्ताओं ने कहा है कि मतदाता की पुष्टि के लिए जिस तरह के दस्तावेज मांगे जा रहे हैं, वह अव्यवहारिक है. करोड़ों मतदाताओं की पुष्टि से जड़ी जांच-सुधार की प्रक्रिया को पूरा करने के लिए बहुत कम समय रखा गया है. ऐसे में यह साफ है कि बहुत से मतदाताओं का नाम वोटर लिस्ट से बाहर हो जाएगा. ये लोग बिहार विधानसभा चुनाव में मतदान से वंचित रह जाएंगे इसलिए, 24 जून 2025 को जारी चुनाव आयोग के आदेश को तत्काल निरस्त करने की जरूरत है।

आरक्षण खत्म करने की कोशिश कर रही है भाजपा : अखिलेश

बोले- जिन स्कूलों में लगेगा ताला वहां 15 अगस्त को सपा तिरंगा फहराएगी

4पीएम न्यूज़ नेटवर्क

लखनऊ। सपा अध्यक्ष और पूर्व मुख्यमंत्री अखिलेश यादव का भाजपा सरकार पर तीखा प्रहार जारी है। उन्होंने कहा वर्तमान सरकार आने वाली पीढ़ी से शिक्षा का अधिकार छीनना चाहती है। पढ़ाई से वंचित बच्चों की संख्या लाखों में है। अखिलेश यादव प्रदेश सपा मुख्यालय पर विभिन्न जिलों से आए कार्यकर्ताओं को संबोधित कर रहे थे।

उन्होंने कहा कि भाजपा सरकार की शिक्षा विरोधी नीति के खिलाफ 15 अगस्त को स्वतंत्रता दिवस पर समाजवादी पार्टी के विधायक, नेता और पदाधिकारी ऐसे गांवों में जाकर स्वतंत्रता दिवस मनाएंगे, जहां स्कूलों को बंद किया जा रहा है। उत्तर प्रदेश में लगभग पांच हजार प्राइमरी स्कूलों को बंद करने का निर्णय है। सपा अध्यक्ष ने कहा कि भाजपा का एजेंडा सामाजिक न्याय के विरुद्ध है। भाजपा गरीब, पिछड़ों, दलितों व अल्पसंख्यकों का उनके हक नहीं देना चाहती है। वह आरक्षण खत्म करने का षडयंत्र कर रही है। उन्होंने कहा कि बिहार में चुनाव आयोग मतदाताओं की मनमानी छंटनी की तैयारी में है। इस अवसर पर पूर्व कैबिनेट मंत्री राजेंद्र चौधरी, सांसद सनातन पांडेय आदि उपस्थित रहे।

सपा छात्र सभा के राष्ट्रीय सचिव समेत आठ पर केस

जानकीपुरम सेक्टर आई निवासी भाजयुमो के नगर महामंत्री अमित त्रिपाठी ने सपा छात्र सभा के राष्ट्रीय सचिव सुजीत यादव व कार्यकर्ताओं पर पोस्टर फाड़ने का आरोप लगाया है। आरोपियों पर भाजपा नेता व उनके परिवार की हत्या करने की धमकी देने का भी आरोप है। हजरतगंज पुलिस ने सुजीत समेत आठ लोगों के खिलाफ धमकाने और अन्य गंभीर धारा में एफआईआर दर्ज की है।अमित के मुताबिक, कुछ दिन पहले सपा के राष्ट्रीय अध्यक्ष अखिलेश यादव के बयानों के विरोध में कुछ व्यंग्यात्मक पोस्टर विभिन्न चौराहों पर लगाए गए थे। आरोप है कि सुजीत यादव व सपा कार्यकर्ता पवन सरोज, मनीष यादव, दिनेश यादव, शैलेंद्र यादव, बृजमोहन यादव, बीपी रघुवंशी, इंजीनियर सुशील पांडेय व कौस्तुभ तिवारी ने सारे पोस्टर फाड़ डाले। आरोपियों ने चौराहों पर अराजकता की। इतना ही नहीं, आरोपी सोशल मीडिया के जरिये उन्हें व उनके परिवार से गाली गलौज कर रहे हैं। भाजपा नेता का आरोप है कि आरोपी उनके घर के बाहर सपा के झंडे लगी गाड़ियों से चक्कर काट रहे हैं। अमित ने आरोपियों से अपनी व परिवार की जान का खतरा होने की आशंका जताते हुए हजरतगंज थाने में शनिवार को तहरीर दी। इंस्पेक्टर विक्रम सिंह के मुताबिक तफ्तीश की जा रही है। साक्ष्यों के आधार पर कार्रवाई की जाएगी।

केंद्र सरकार हिमाचल की मदद करे : सुक्खू

» सीएम ने पीएम मोदी को लिखा पत्र

4पीएम न्यूज़ नेटवर्क

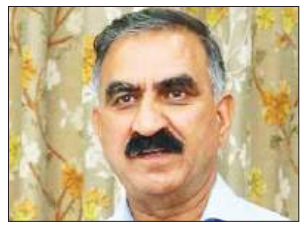

शिमला। मुख्यमंत्री सुखविंद्र सिंह सुक्खू ने केंद्र सरकार से हिमाचल प्रदेश में शिपकी-ला मार्ग से कैलाश मानसरोवर यात्रा (केएमवाई) खोलने की व्यवहार्यता तलाशने का आग्रह किया है। प्रधानमंत्री नरेंद्र मोदी को लिखे पत्र में मुख्यमंत्री ने कहा कि शिपकी-ला क्षेत्र आधुनिक सीमाओं से पहले एक महत्वपूर्ण भारत-तिब्बत व्यापार मार्ग के रूप में कार्य करता रहा है।

उन्होंने कहा कि यह तिब्बती बौद्ध धर्म और प्राचीन तीर्थयात्रा पथों के लिए एक सांस्कृतिक गलियारा भी रहा है, जो कैलाश और मानसरोवर के साथ भारत के स्थायी सभ्यतागत संबंधों को दर्शाता है। उन्होंने कहा कि हिमाचल प्रदेश का किन्नौर क्षेत्र अर्ध-शुष्क है और स्पीति जैसे वर्षा छाया क्षेत्र में स्थित है, इसलिए मानसून की बाधाओं का खतरा कम है, जिससे वर्ष के अधिकांश समय मार्ग सुलभ रहता है। उन्होंने कहा कि शिपकी-ला से गरटोक होते हुए दारचेन और मानसरोवर की ओर जाने वाला मार्ग तिब्बती पक्ष की तुलना में छोटा है। उन्होंने कहा कि शिपकी-ला एक अधिक स्थिर और स्पष्ट गलियारा भी प्रदान करता है, जो इसे तीर्थयात्रा और सीमा पार संपर्क के लिए दीर्घकालिक, भरोसेमंद गलियारे के रूप में उपयुक्त बनाता है। ठाकुर सुखविंद्र सिंह सुक्खू ने कहा कि हिमाचल प्रदेश में पहले से ही रामपुर और पूह के माध्यम से शिपकी-ला तक सड़क संपर्क है। उन्होंने कहा कि आधार शिविरों और सहायक बुनियादी ढांचे के केंद्रित विकास के साथ, इस मार्ग को कैलाश मानसरोवर यात्रा ढांचे में निर्बाध रूप से एकीकृत किया जा सकता है। उन्होंने जोर देकर कहा कि इस मार्ग के खुलने से किन्नौर के जनजातीय लोगों के सामाजिक-आर्थिक उत्थान में महत्वपूर्ण योगदान मिलेगा, जो कि वाइब्रेंट विलेज कार्यक्रम के तहत सीमा विकास और पर्यटन को बढ़ावा देने के लिए सरकार के दृष्टिकोण के अनुरूप है।

एआईएडीएमके भाजपा संग गठबंधन में रहेगा बड़ा भाई : पलानीस्वामी

» एआईएडीएमके महासचिव ने कहा- विजय के लिए दरवाजे खुले हैं

4पीएम न्यूज़ नेटवर्क

चेन्नई। गठबंधन का नेतृत्व एआईएडीएमके करेगी और सरकार एआईएडीएमके बनाएगी। अन्नाद्रमुक सुप्रीमो का यह बयान पार्टी के भीतर इस भावना के बीच आया है कि भाजपा, जो तमिलनाडु में पैर जमाने का लक्ष्य बना रही है, कहानी चुराने का प्रयास कर रही है।

एआईएडीएमके महासचिव एडप्पादी के पलानीस्वामी (ईपीएस) ने शनिवार को स्पष्ट किया कि द्रविड़ पार्टी भाजपा के साथ अपने गठबंधन में बड़ा भाई है, जबकि विजय की तमिलगा वेत्री कझगम (टीवीके) के साथ हाथ मिलाने के लिए दरवाजा खुला रखा है। पलानीस्वामी ने कहा कि एआईएडीएमके-भाजपा गठबंधन बन गया है। इस गठबंधन का नेतृत्व एआईएडीएमके करेगी और सरकार एआईएडीएमके बनाएगी। अन्नाद्रमुक सुप्रीमो का यह बयान पार्टी के भीतर इस भावना के बीच आया है कि भाजपा, जो तमिलनाडु में पैर जमाने का लक्ष्य बना रही है, कहानी चुराने का प्रयास कर रही है। इससे पहले भी पलानीस्वामी ने इन आरोपों को खारिज किया था कि भाजपा गठबंधन में एआईएडीएमके पर हावी हो जाएगी। उन्होंने कहा कि कोई भी पार्टी, चाहे कितनी भी बड़ी क्यों न हो, इस पर हावी नहीं हो सकती। एआईएडीएमके ने तमिलनाडु पर 30 साल से अधिक समय तक शासन किया है। पलानीस्वामी ने यह भी कहा था कि अगर गठबंधन 2026 के विधानसभा चुनाव जीतता है तो तमिलनाडु में कोई गठबंधन सरकार नहीं बनेगी और यह समझौता केवल चुनाव के लिए है। यह तब हुआ जब केंद्रीय गृह मंत्री अमित शाह ने कहा कि भाजपा और एआईएडीएमके मिलकर सरकार बनाएंगे।

मौसम और इंसान कब बदल जाए कोई भरोसा नहीं : वसुंधरा राजे

पूर्व मंत्री प्रो. सांवरलाल जाट की प्रतिमा का किया अनावरण

4पीएम न्यूज़ नेटवर्क

जयपुर। मोदी सरकार के पहले कार्यकाल में जल संसाधन राज्यमंत्री रहे प्रो. सांवरलाल जाट की प्रतिमा का अजमेर के में अनावरण के अवसर पूर्व सीएम ने बहुत भावुक बयान दिया। वसुंधरा राजे सांवरलाल जाट को याद करते हुए अपने सोशल मीडिया हैंडल एक्स पर पोस्ट लिखी।

राजे ने लिखा कि मौसम और इंसान कब बदल जाए कोई भरोसा नहीं। आजकल राजनीति में लोग नई दुनिया बसा लेते हैं, एक चेहरे पे कई चेहरे लगा लेते हैं, पर प्रो. सांवरलाल जाट ऐसे नहीं थे। वे मरते दम तक मेरे साथ थे। उन्होंने आगे लिखा कि भैरोंसिंह शेखावत, स्व. प्रो. सांवरलाल जाट और डॉ. दिगंबर सिंह के चले जाने से बहुत नुकसान हुआ। वे मेरी मदद के लिए हमेशा तैयार रहते थे। मेरी तरह स्व. प्रो. जाट भी राजनीति में पूर्व उपराष्ट्रपति स्व. भैरों सिंह शेखावत की स्कूल के छात्र थे। उनकी अजमेर लोकसभा चुनाव लड़ने की इच्छा नहीं थी पर अनुशासित होने के कारण लड़े और जीते। हमने 2018 में जब किसानों का 50 हजार तक का कर्जा माफ किया तब स्व. सांवरलाल जाट होते तो बहुत खुश होते। अजमेर में बीसलपुर का पानी उन्होंने ही पहुंचाया। उनकी चाह थी कि चम्बल बेसिन का पानी बीसलपुर बांध में डले। हमने 2018 में ईआरसीपी शुरू की, जिससे सांवर जी का सपना पूरा होगा। उनके निधन को प्रधानमंत्री नरेंद्र मोदी ने भाजपा और राष्ट्र के लिए एक बड़ी क्षति बताया था। अब उनके पुत्र विधायक रामस्वरूप लांबा उनकी सोच को आगे बढ़ा रहे हैं। पूर्व मुख्यमंत्री राजे ने कहा कि सांवरलाल जाट और मेरी एक ही पाठशाला थी। हम दोनों ने भैरोंसिंहजी की पाठशाला में पढ़ाई की थी, इसलिए दोनों के विचार भी हमेशा मिलते रहे और साथ में मिलकर काम किया। सांवरलाल जाट राजस्थान सरकार में 1993, 2003 और 2013 में (तीन बार) मंत्री रहे। इसके बाद 2014 में अजमेर से लोकसभा चुनाव जीतने के बाद उन्हें मोदी सरकार में जल संसाधन राज्यमंत्री बनाया। हालांकि मंत्रिमंडल फेरबदल के दौरान उन्हें मंत्री पद से हटा दिया गया था। हार्ट अटैक के बाद उनका दिल्ली एम्स में काफी समय तक इलाज चला और अगस्त 2017 में उनका निधन हो गया।

आप जातिगत जनगणना को लेकर चलायेगा जनचेतना अभियान : छवि

4पीएम न्यूज़ नेटवर्क

लखनऊ। आम आदमी पार्टी (आप) पिछड़ा वर्ग प्रकोष्ठ प्रदेश कार्यकारिणी की बैठक हुई। बैठक की अध्यक्षता करते हुए प्रदेश अध्यक्ष डॉ. छवि यादव ने संगठन विस्तार, सामाजिक न्याय के मुद्दों और जनसंपर्क अभियानों पर विस्तार से चर्चा की।

डॉ. छवि यादव ने कहा कि हमें संगठन को गाँव-गाँव, शहर-शहर तक मज़बूत करना है। इसके लिए हर जिले में जनसभा और बैठकों के माध्यम से पार्टी के विचारों को जन-जन तक पहुचाया जाएगा। हमारा लक्ष्य केवल संगठन का विस्तार नहीं, बल्कि सामाजिक न्याय और संवैधानिक अधिकारों की आवाज़ को ताकत देना है। बैठक में संगठन को बूथ स्तर तक सशक्त करने, युवाओं को जोड़ने, जातिगत जनगणना जैसे महत्वपूर्ण मुद्दों को लेकर जनचेतना अभियान चलाने का संकल्प लिया गया। बैठक में महासचिव विनय कुमार यादव, प्रदेश उपाध्यक्ष प्रदीप यादव, गुड्डू यादव, जतन भाटी, प्रदेश सचिव राजकुमार वर्मा, परशुराम, श्याम सिंह पाल, आरिफ खान, पंकज यादव, सुशील यादव आदि उपस्थित थे।

मतदाता सूची गहन पुनरीक्षण या सियासी संरक्षण!

भारतीय नागरिकता का प्रमाण मांगने पर बिफरा महागठबंधन

» बिहार में विपक्ष ने उठाए सवाल, आयोग की है तैयारी

» राजद नेता तेजस्वी ने खोला मोर्चा

4पीएम न्यूज़ नेटवर्क

पटना। महाराष्ट्र विधानसभा चुनाव में मतदाता सूची को लेकर उठा सियासी तूफ़ान अभी शांत नहीं हुआ था कि बिहार में भी ऐसे ही माहौल की तैयारी हो गई है। राजद नेता और पूर्व उपमुख्यमंत्री तेजस्वी यादव ने बीते दिन मतदाता सूची की पुनरीक्षण प्रक्रिया को सरकार की साजिश करार दिया।

हालांकि, चुनाव आयोग पहले ही तमाम राजनीतिक दलों की ओर से लगाए गए ऐसे आरोपों को सिरे से खारिज करता आया है। चर्चा ऐसी भी हो रही है कि पुनरीक्षण के बहाने भाजपा सियासी संरक्षण प्राप्त करने की मंशा रखती हैं। दरअसल पूरा विवाद वोटर लिस्ट को लेकर है। अगले साल बंगाल में भी चुनाव हैं । वहां ममता सरकार पर आरोप लगते हैं कि उन्होंने बांग्लादेशियों के वोटर कार्ड बनाकर अपना मतदाता बना लिया हैं ऐसे पुनरीक्षण से ये वोटरकाई पकड़े जाएंगे व आयोग उनको रद्द कर देगा। इससे भाजपा का दावा है कि फर्जी वोटिंग रूक जाएंगे।

नई सूची के लिए नए सिरे से आवेदन करना होगा?

हां, लेकिन 2003 की गहन पुनरीक्षण वाली मतदाता सूची में नाम होगा तो कोई कागज संलग्न नहीं करना होगा। केवल गणना फॉर्म भरकर उसी से सत्यापन हो जाएगा। उसके बाद जो भी लोग मतदाता सूची में जुड़े हैं, उनसे नागरिकता साबित करने वाला अलग-अलग प्रमाण-पत्र मांगा गया है। हां। नए प्रारूप में जानकारी ली जा रही है और सारा रिकॉर्ड एक लंबे अरसे के लिए रहेगा, इसलिए नया वोटर आईडी कार्ड भी बाद में जारी किया जाएगा।

आधार कार्ड को मतदाता सूची से लिंक करने की कवायद हो रही तो मान्यता क्यों नहीं दी गई?

एक पिता की एक संतान का दो आधार कार्ड असंभव माना जाता है। आंखों की पुतलियों और फिंगर प्रिंट रिकॉर्ड के कारण भी डुप्लीकेसी की आशंका नहीं रहती है। इसी आधार को देखते हुए, मतदाता सूची में कोई आदमी दो जगह न जुड़ा रहे- वोटर कार्ड को आधार कार्ड से जोड़ने का प्रस्ताव है। गहन पुनरीक्षण में आधार का डाटा इसलिए अमान्य हो जाता, क्योंकि यह कई बार साबित हो चुका है कि विदेशियों ने भी आधार कार्ड बनवा रखे हैं। 2024 लोकसभा चुनाव वाली मतदाता सूची पर भी सवाल?सिर्फ 2024 के लोकसभा चुनाव की ही बात नहीं है, बल्कि 2003 के बाद से हर पुनरीक्षण पर प्रकाशित हुई मतदाता सूची में कभी मृत वोटरों का रिकॉर्ड मिलता था तो कभी मौजूदा वोटरों का नाम गायब। कई जिलों से बांग्लादेशियों के भी वोटर बने होने की सूचना आ चुकी है। इसलिए, पक्का करने के लिए गहन पुनरीक्षण प्रक्रिया हो रही है। यह प्रक्रिया किसी पुराने चुनाव की मतदाता सूची को गलत नहीं करार देगी।

गरीबों-वंचितों का नाम मतदाता सूची से काटे जाने का दावा गलत

2003 के पूर्व के वोटरों से अलग कुछ कागज नहीं मांगे जाएंगे। उसके बाद वालों के पास 11 तरह के कागजों का विकल्प है। अगर यह सब भी नहीं उपलब्ध हुआ तो 1 अगस्त से 1 सितंबर के बीच दावा-आपत्ति दाखिल करने पर अधिकारी भौतिक निरीक्षण कर पुष्टि करेंगे कि फलां व्यक्ति वास्तव में यहीं का नागरिक है। दावा सही होने पर उसे भी बाकी वोटरों की तरह जोड़ लिया जाएगा। निर्वाचन आयोग के वोटर कार्ड की जगह अब ज्यादातर योजनाएं आधार और बैंक खाते से जुड़ी हैं। इसलिए, इस प्रक्रिया के आधार पर यह आरोप निराधार प्रतीत होता है।

सभी पुरानी मतदाता सूचियों को रद्द कर दिया जाएगा?

विशेष गहन पुनरीक्षण इससे पहले वर्ष 2003 में हुआ था। उस समय जो मतदाता सूची प्रकाशित की गई, उसे पूर्ण मान्यता मिली हुई है। उसके बाद के सभी पुनरीक्षण और पुनः प्रकाशन के जो भी रिकॉर्ड हैं, उन्हें वेरीफाई किया जाना है। यानी, 2003 की उस मतदाता सूची के बाद जो भी नए वोटर जुड़े या हटे हैं, उनका सत्यापन किया जाएगा। बगैर सत्यापन उन्हें वोटर नहीं माना जाएगा।

गिनती के दिनों में यह करना संभव?

22 साल पहले यानी 2003 में इस प्रक्रिया के दौरान दो साल लगे थे। एक महीने में विशेष गहन पुनरीक्षण का रिकॉर्ड जुटाकर सत्यापन करना और उसके बाद पूरे एक महीने दावा-आपत्तियों को करना है। 22 साल पहले सब कुछ कंप्यूटराइज्ड नहीं था। मोबाइल या टैब जैसे डाटा फीड उपकरण नहीं थे। ऑनलाइन फॉर्म भरने या एक व्यक्ति के डाटा को लेकर फॉर्म प्रिंट करने का विकल्प सुलभ नहीं था। इसके अलावा तकनीक-सक्षम मानव संसाधन भी नहीं थे। इसलिए अब यह सवाल इच्छाशक्ति और समर्पण पर ही निर्भर करता है।

चुनाव से दो महीने पहले यह विशेष पुनरीक्षण जैसी बड़ी एक्सरसाइज पर सवाल

पश्चिम बंगाल के साथ-साथ बिहार में भी अवैध बांग्लादेशियों के रहने के दावे किए जा रहे हैं। इसके अलावा यह भी सदंह जताया जा रहा है कि कुछ पाकस्तानी मूल के लोग भी अवैध तरीके से बिहार में रह रहे हैं। ऐसे में फर्जी दस्तावेजों के जरिए मतदान प्रक्रिया में अवैध घुसपैठियों के हिस्सा लेने की आशंका बढ़ गई है। इसी दावों को ध्यान में रखते हुए और चुनाव को पारदर्शी व निष्पक्ष आयोजित कराने के उद्देश्य से पुनरीक्षण कराया जा रहा है। हालांकि, यह प्रक्रिया लोकसभा चुनाव के वक्त क्यों नहीं कराई गई, ऐसे लेकर कई तरह के सवाल के रहे हैं।

एक महीने के अंदर लोग दस्तावेज कहां से लाएंगे?

तेजस्वी यादव की मानें तो नौ करोड़ योग्य मतदाताओं में से 4 प्रतिशत लोग 39-40 आयु के हैं। ऐसे ही 20 से 38 साल के 85 प्रतिशत लोग यानी करीब चार करोड़ से अधिक को अपने पिता या माता की नागरिकता का प्रमाण देना होगा। 18 से 20 वर्ष के 11 प्रतिशत लोग यानी 50 लाख से अधिक को माता और पिता, दोनों की नागरिकता के दस्तावेज देने होंगे। ऐसे मामले में जो लोग सही हैं, उन्हें खुद को सही साबित करने में न पहले परेशानी थी और न आगे होगी। 11 प्रमाणपत्रों में से कोई भी नहीं हो, तो भी दावा-आपत्ति के जरिए नागरिकता सिद्ध करने का विकल्प है।

सत्तारूढ़ राष्ट्रीय जनतांत्रिक गठबंधन की साजिश : तेजस्वी

बिहार विधानसभा चुनाव अक्तूबर मध्य से नवंबर के पहले हफ्ते के बीच हो सकते हैं। अब तक की तैयारी इसी ओर इशारा कर रही है। चुनाव के पहले कहीं भी मतदाता सूची का पुनरीक्षण और पुनः प्रकाशन होता है। इसी क्रम में बिहार में भी चुनाव आयोग मतदाता सूची का गहन पुनरीक्षण करा रहा है। बिहार विधानसभा में विपक्ष के नेता और आगामी चुनाव में महागठबंधन के संभावित सीएम फेस तेजस्वी यादव ने बिहार चुनाव से पहले मतदाताओं के गहन पुनरीक्षण को सत्तारूढ़ राष्ट्रीय जनतांत्रिक गठबंधन की साजिश करार दिया। तेजस्वी यादव ने कई तरह के आरोप लगाए, कई गंभीर सवाल भी पूछे। इस बीच दस्तावेजों, कागजातों और जमीन पर काम कर रहे अधिकारियों के बीच पहुंचकर पड़ताल की और जानने की कोशिश की कि पूरी प्रक्रिया को लेकर कैसे-कैसे उठ रहे हैं और चुनाव आयोग ने इस पूरी प्रक्रिया को लेकर कैसी तैयारी की है।

जिनके पास जन्म प्रमाणपत्र, मैट्रिक प्रमाण-पत्र और जाति प्रमाण-पत्र तीनों में से कुछ नहीं होगा, उनका क्या होगा?

2001-2005 में जन्मे बच्चों में केवल 2.8 प्रतिशत के पास जन्म प्रमाण-पत्र है। आज जो 40 से 60 वर्ष के हैं, उनमें से केवल 10-13 प्रतिशत के पास मैट्रिक प्रमाण-पत्र होगा। इंडिया ह्यूमन डेवलपमेंट सर्वे 2011-12 के अनुसार अनुसूचित जातियों के लगभग 20 प्रतिशत और अन्य पिछड़ा वर्ग के लगभग 25 प्रतिश लोगों के पास ही जाति प्रमाण-पत्र था। औसतन 20 प्रतिशत परिवारों के पास ही यह प्रमाण-पत्र होगा। ऐसे में जिनके पास जन्म प्रमाणपत्र भी नहीं, मैट्रिक भी नहीं है और जाति प्रमाणपत्र भी नहीं होगा, वह बाकी कोई भी कागज नहीं दे सके तो नागरिकता का दावा करेंगे। उन दावों का भौतिक सत्यापन किया जाएगा।

जातीय सर्वेक्षण में 9-10 महीने लगे थे, तब कोई दस्तावेज नहीं मांगा गया था। यह इतनी जल्दी कैसे होगा?

निर्वाचन आयोग ने बाकी राज्यों में जो भी तय किया था, वह समय पर हुआ है। बिहार की भौतिक परिस्थितियों के कारण विशेष गहन पुनरीक्षण का काम पूरा करने में चुनौतियां आ सकती हैं। दावा-आपत्ति लेकर भी इस काम को चुनाव बाद के लिए टाला जा सकता है। भारत सरकार के अनुसार बिहार के 2 करोड़ 90 लाख पंजीकृत मजदूर बिहार से बाहर कार्य करते हैं। इनका क्या होगा?वोटरों का पुराना रिकॉर्ड ऑनलाइन है। फॉर्म के प्रिंट का भौतिक सत्यापन करते समय बीएलओ इस पर अपनी टिप्पणी लिखेंगे और ऊपर के अधिकारी दावा-आपत्ति की प्रक्रिया तक इसका भी समाधान कर लेंगे।

73 प्रतिशत क्षेत्रफल बाढ़ से प्रभावित, प्रक्रिया में सबसे बड़ी यही चुनौती

बिहार की भौगोलिक स्थिति के हिसाब से चुनाव भी बाढ़ के दौरान नहीं कराने की परंपरा रही है। नेपाल से सटे जिले- पश्चिम चंपारण, पूर्व चंपारण, सीतामढ़ी, मधुबनी, सुपौल, अररिया और किशनगंज तो बाढ़ के प्रभाव में रहते ही हैं। नेपाली बाढ़ का पानी शिवहर, मुजफ्फरपुर, दरभंगा, समस्तीपुर, सहरसा, मधेपुरा, पूर्णिया, कटिहार आदि को भी बुरी तरह प्रभावित करता है। कई बार तो खगड़िया और यदा-कदा बेगूसराय भी इस बाढ़ की जद में आए हैं। इस बार भी बाढ़ की आशंका है। झारखंड की नदियों से गया, नवादा में आश्चर्यजनक तौर पर तेजी से पानी आ रहा है। इस तरह देखें तो लगभग आधा बिहार तो बाढ़ की आशंका या आंशिक प्रभाव में रहेगा ही। इस समय लोग परेशान रहते हैं। शादी-ब्याह तक रुक जाता है। ऐसे में बाढ़ राहत के साथ मतादाताओं के कागजात जुटाना कर्मचारियों के लिए चुनौती का सबब बन सकता है।

Sanjay Sharma

editor.sanjaysharma

@Editor_Sanjay

जिद... सच की

शहरी जाम से निकलने का हो ठोस निदान

बारिश के मौसम जहां जलभराव आम है वहीं ट्रैफिक जाम भी एक बड़ी समस्या के रूप में सामने आती है। ये समस्या देश के हर बड़े शहर में देखने को मिलती है। लखनऊ से लेकर इंदौर तक जाम से आमजन परेशान है। अब ऐसी रिपोर्टें आ रही हैं से बीमारियों को भी बढ़ा रहे हैं। डॉक्टरों के अनुसार, जाम में फंसने वालों को अकसर ब्लड प्रेशर बढ़ने, बर्नआउट, सांस की बीमारी, डिहाईड्रेशन, फीवर, घबराहट, सीने में दर्द आदि बीमारियों का सामना करना पड़ता है। गंभीर मरीज लंबे समय तक जाम में फंस जाए तो उसकी मौत भी हो सकती है। अभी कुछ दिन पहले इंदौर-देवास हाईवे पर करीब पर 40 घंटे तक 8 किलोमीटर लंबा जाम लग गया, जिसमें 4000 से ज्यादा वाहन फंस गए थे। इस दौरान 3 लोगों की जान चली गई। 14 जून को केरल के कन्नूर में कोट्टियूर के पास एक तीन वर्षीय बच्चे की अस्पताल ले जा रही एम्बुलेंस के भीषण ट्रैफिक जाम में फंस जाने से मौत हो गई। 7 जून दिल्ली से आए एक 62 वर्षीय पर्यटक कमल किशोर टंडन की मसूरी में भीषण ट्रैफिक जाम में फंसने के बाद अस्पताल ले जाते समय मौत हो गई।

6 मई उप्र के हमीरपुर जिले के सुमेरपुर थाना क्षेत्र में एक डंपर की टक्कर से बाइक सवार युवक गंभीर रूप से घायल हो गया और राजमार्ग पर तीन घंटे तक जाम फंसे रहने की वजह से उसे वक्त पर उचित उपचार नहीं मिला और इस वजह से उसकी मौत हो गई। मध्य प्रदेश के हाईकोर्ट ने फटकार लगाते हुए नेशनल हाईवे अथॉरिटी ऑफ इंडिया यानी एनएचएआई को इस घटना के लिए जिम्मेदार बताया था। निश्चित रूप से इस दुर्घटना और हजारों लोगों के घंटों जाम में फंसे रहने के मामले में जहां एनएचएआई की तरफ से माफी मांगने की जरूरत थी, वहीं उसने दुर्भाग्यपूर्ण घटना के लिये दोष लोगों पर लगाते हुए असंवेदनशील बयान दे डाला। 30 जून को अदालत में जवाब देते हुए एनएचएआई के वकील ने कहा कि लोग बिना जरूरी काम के इतनी सुबह घर से बाहर निकलते ही क्यों हैं? एनएचएआई की इस टिप्पणी ने लोगों में आक्रोश पैदा कर दिया। देश में जहां एक तरफ ट्रैफिक की समस्या से निजात पाने के लिए सड़कों, हाई-वेज और एक्सप्रेस-वेज को बनाने का काम जोरों-शोरों पर चल रहा है, वहीं दूसरी ओर कुछ ऐसे शहर भी हैं, जो अंदरूनी ट्रैफिक से काफी ज्यादा परेशान हैं। असल में, ट्रैफिक जाम की समस्या से बड़े ही नहीं बल्कि छोटे शहर भी जूझते हैं। लेकिन बड़े शहरों में यह एक संकट का रूप लेने लगा है। उनके इस बयान को सुनकर लोगों को ऐसा लग रहा है कि एनएचएआई घटना की जिम्मेदारी लेने से बच रहा है और घटना के लिए आम लोगों को ही दोषी बताने की कोशिश कर रहा है। यहां तक कि मध्य प्रदेश उच्च न्यायालय ने भी एनएचएआई के रुख को कठोर और संवेदनहीन बताया है, जो जमीनी हकीकत को नजरअंदाज करने वाला है। विवाद बढ़ने पर एनएचएआई ने कहा कि,यह टिप्पणी अथॉरिटी के आधिकारिक विचारों को नहीं दर्शाती।

“ डॉक्टरों के अनुसार, जाम में फंसने वालों को अकसर ब्लड प्रेशर बढ़ने, बर्नआउट, सांस की बीमारी, डिहाईड्रेशन, फीवर, घबराहट, सीने में दर्द आदि बीमारियों का सामना करना पड़ता है। गंभीर मरीज लंबे समय तक जाम में फंस जाए तो उसकी मौत भी हो सकती है।

(इस लेख पर आप अपनी राय 9559286005 पर एसएमएस या info@4pm.co.in पर ई-मेल भी कर सकते हैं)

वोटर सूची संशोधन संबंधी सवालों का शीघ्र हो समाधान

एसवाई कुरैशी

जब भारत के चुनाव आयोग ने बिहार विधानसभा चुनाव से ऐन कुछ महीने पहले मतदाता सूचियों में विशेष गहन संशोधन (एसआईआर) किए जाने की घोषणा कर दी, तो इससे राजनीतिक हलकों में कई तरह की आशंकाएं पैदा हो गई। हालांकि चुनाव आयोग इस कवायद का बचाव संवैधानिक अनिवार्यता बताकर कर रहा है। संविधान के अनुच्छेद 326 में यह जरूरी है कि केवल 18 वर्ष या उससे अधिक आयु के भारतीय नागरिक ही मतदान के हकदार हैं। आयोग के मुताबिक, वर्तमान संशोधन का उद्देश्य सूचियों में सुधार करके यह प्रावधान यकीनी बनाना है। इस विशेष गहन संशोधन प्रक्रिया के तहत 2003 की मतदाता सूचियों में जिनका नाम शामिल था, उन्हें सत्यापित मतदाता माना जाएगा। अतीत में भी चुनाव आयोग उन जगहों पर गहन संशोधन करने का आदेश देता आया है, जहां उसे मतदान सूची की विश्वसनीयता संदिग्ध या पुरानी लगे।

हालांकि, जिन लोगों का नाम 2003 के बाद मतदाता सूची में शामिल हुआ है या जिन्होंने नाम कभी शामिल नहीं कराया- उन्हें अब नागरिकता की स्व-घोषणा और अन्य सहायक दस्तावेज जैसे जन्म प्रमाणपत्र या माता-पिता का प्रमाणपत्र जमा कराना होगा। इसके पीछे घोषित इरादा चुनावी डेटाबेस अपडेट व शुद्ध करना है। लेकिन, ईमानदार दिखने वाली अनेक अन्य प्रक्रियाओं की तरह यहां भी छिपी चतुराई विवरण में स्पष्ट हो जाती है। मतदाता सूचियों को संशोधित करने का विचार नया नहीं है। वास्तव में, 2003 की कवायद के तुरंत बाद चुनाव आयोग ने कई पूर्वोत्तर राज्यों और जम्मू एवं कश्मीर में बड़े पैमाने पर गहन संशोधन प्रक्रिया चलाई थी। हालांकि, तब इन संशोधनों को चुनावों से ऐन पहले नहीं करवाया गया था, न ही चुनिंदा मतदाता समूहों के लिए अतिरिक्त दस्तावेज़ों की आवश्यकता थी। इससे पहले भी, बिहार सहित 20 अन्य राज्यों में चरणबद्ध तरीके से इसी किस्म की कवायद हुई थी। एसआईआर मतदाता पंजीकरण प्रक्रिया का आधारभूत अवयव हैं - विशेषतया बड़े पैमाने पर हुई कवायदों में जैसे परिसीमन, किसी क्षेत्र में उथल-पुथल उपरांत शांतिकाल या डिजिटलीकरण।

2003 व 2004 के बाद से वार्षिक सारांश संशोधन सामान्य प्रक्रिया बन गये। साल 2004 के बाद किसी भी राज्य को चुनाव आयोग के सचेत निर्णय चालित गहन संशोधन नहीं करना पड़ा, क्योंकि घर-घर सर्वेक्षण के अलावा

वार्षिक सारांश रिपोर्ट पर्याप्त थी। स्थापित प्रथा से विचलन व जिस वक्त यह कवायद की जा रही है, वह बिहार में इसे विवादास्पद बनाता है। निस्संदेह, मतदाता सूचियों को नियमित अपडेट किया जाना चाहिए - लेकिन बिहार जैसे बाढ़-ग्रस्त, उच्च-प्रवासन वाले राज्य में मतदान से बमुश्किल चार महीने पहले ऐसा करना इसे बहुत मुश्किल काम बनाता है। मूलत:, यह संशोधन प्रमाण पेश करने का भार मतदाता पर डाल रहा है। जिन लोगों के नाम 2003 की मतदाता सूची में नहीं हैं, उन्हें अब दस्तावेज़ी साक्ष्यों के साथ अपनी प्रमाणिकता साबित करनी होगी। सैद्धांतिक रूप में भले यह उचित लगता हो, किंतु व्यावहारिक पटल पर इससे उन लोगों को मताधिकार से वंचित करने का खतरा बन जाता है, जिनकी सरकारी कागजात पूरा करने की दरकारों में फंसने की गुंजाइश सबसे अधिक है, मसलन, प्रवासी मज़दूर, दलित, आदिवासी, शहरी गरीब, अल्पसंख्यक, बुजुर्ग और महिलाएं- जिनमें से अधिकांश के पास जन्मप्रमाण पत्र या माता-पिता के दस्तावेज़ नहीं। ऐसे लोगों के लिए उनका नाम पिछली मतदाता सूची में होना पर्याप्त माना जाना चाहिए था, खासकर अब जबकि डिजिटलीकरण काफी उन्नत है। यहां पर असम की एनआरसी प्रक्रिया के साथ समानता करने से बच नहीं सकते। वहां भी, ऐतिहासिक दस्तावेजों की अनिवार्यता पूरी न किए जाने के कारण लगभग बीस लाख लोग मतदान सूची से बाहर हो चुके हैं, जिनमें से अधिकतर ग़रीब हैं। जबकि चुनाव आयोग का दावा है कि एसआईआर चुनावी प्रक्रिया है-न कि नागरिकता की पड़ताल।

इस मुद्दे को और जटिल बनाता है,व्यापक परामर्श का अभाव। विपक्षी दलों का आरोप है कि विशेष गहन संशोधन को बिना किसी पूर्व सूचना के या उनसे चर्चा किए बिना शुरू कर दिया गया है। चुनाव आयोग ने 2002-03 में 20 राज्यों में एसआईआर और पूर्वोत्तर राज्यों और जम्मू-कश्मीर में 2004 के संशोधन करने के दौरान, राष्ट्रीय और राज्य स्तरीय दलों के साथ पहले मशविरा किया था। ऐसी कवायद जल्दबाजी में नहीं बल्कि अक्सर चुनावों से कई साल पहले की जाती थी, जिससे फीडबैक, जन जागरूकता मुहिम और पार्टियों की भागीदारी के लिए पर्याप्त समय मिल सके। विगत में चुनाव आयोग ने 2003 की मतदाता सूची को ऑनलाइन प्रकाशित किया और घर-घर जाकर सत्यापन में मदद करने के लिए करीब एक लाख बूथ-स्तरीय अधिकारियों और इतने ही वालंटियर तैनात किये।

आत्मनिर्भरता और सामूहिक समृद्धि का अभियान

भारत में सहकारिता का विचार केवल आधुनिक विकास का उपकरण नहीं बल्कि एक सांस्कृतिक परंपरा भी है, जिसकी जड़ें हमारे वेदों, पुराणों और ग्राम्य जीवन के नैतिक तंतुओं में गहराई तक फैली हुई हैं। आज, यही भावना आधुनिक सहकारी आंदोलन के रूप में देश के विकास और समृद्धि की आधारशिला बन चुकी है।

डॉ. बलकार सिंह पूनिया

आधुनिक भारत में सहकारिता अब केवल एक संगठनात्मक ढांचा नहीं रही, बल्कि यह आत्मनिर्भरता, समावेशी विकास और ग्राम आधारित आर्थिक शक्ति का वाहक बन चुकी है। हर वर्ष जुलाई के पहले शनिवार को मनाया जाने वाला अंतर्राष्ट्रीय सहकारिता दिवस केवल एक स्मृति नहीं, बल्कि उस चेतना का उत्सव है जिसमें 'मैं' नहीं बल्कि 'हम' का भाव निहित है। यह वह चेतना है जो व्यक्ति की शक्ति को सामूहिक प्रयास में बदल देती है और समाज को आत्मनिर्भरता की ओर अग्रसर करती है। भारत में सहकारिता का विचार केवल आधुनिक विकास का उपकरण नहीं बल्कि एक सांस्कृतिक परंपरा भी है, जिसकी जड़ें हमारे वेदों, पुराणों और ग्राम्य जीवन के नैतिक तंतुओं में गहराई तक फैली हुई हैं। आज, यही भावना आधुनिक सहकारी आंदोलन के रूप में देश के विकास और समृद्धि की आधारशिला बन चुकी है।

वर्ष 2025 के संयुक्त राष्ट्र अंतर्राष्ट्रीय सहकारिता वर्ष का थीम है 'सहकारिताएं एक बेहतर दुनिया का निर्माण करती हैं'। यह थीम इस बात पर प्रकाश डालती है कि कैसे सहकारी मॉडल कई वैश्विक चुनौतियों से निपटने के लिए एक आवश्यक समाधान है और 2030 तक सतत विकास लक्ष्यों (एसडीजी) को लागू करने के प्रयासों को तेज करने में महत्वपूर्ण भूमिका निभाना जारी रखता है। इसका प्रमाण हाल ही में नई दिल्ली में आयोजित अंतर्राष्ट्रीय वैश्विक सहकारी सम्मेलन में देखने को मिला, जहां 100 से अधिक देशों के लगभग 3,000 प्रतिनिधियों ने भाग लिया। वर्तमान समय में सहकारिता विविध क्षेत्रों में अपनी सशक्त उपस्थिति दर्ज करा रही है। इसमें डेयरी, मत्स्य पालन, जैविक उत्पाद, बीज उत्पादन, खाद्यान्न भंडारण, ग्रामीण बैंकिंग और अब टैक्सी सेवा जैसी शहरी-ग्रामीण परिवहन सुविधाएं भी सम्मिलित हैं। वर्ष 2021 में सहकारिता मंत्रालय की स्थापना इसी दूरदर्शिता का परिणाम है।

भारत में सहकारिता की नींव 1904 में पड़ी, जब औपनिवेशिक शासन ने सहकारी ऋण समितियों का अधिनियम लागू किया। आजादी के बाद सहकारिता ने एक जनांदोलन का रूप लिया। आज देश में लगभग 8.54 लाख समितियां पंजीकृत हैं, जिनमें से साढ़े पांच लाख के करीब सक्रिय रूप से काम कर रही हैं। ये समितियां कृषि, दुग्ध-उत्पादन, बैंकिंग, आवास, श्रम, उपभोक्ता सेवा व स्वयं सहायता समूहों तक अनेक क्षेत्रों में फैली हैं। देश में 63,000 से अधिक प्राथमिक कृषि ऋण समितियों को एकीकृत डिजिटल प्लेटफॉर्म से जोड़ने का कार्य चल रहा है। इससे ये समितियां सिर्फ कृषि ऋण तक सीमित न रहकर बहुउद्देश्यीय सेवा केंद्र के रूप में कार्य कर सकेंगी। किसानों के लिए सहकारिता जीवनरेखा है।

देश के 86 प्रतिशत से अधिक किसान छोटे और सीमांत हैं, जिनके लिए व्यक्तिगत रूप से आधुनिक संसाधनों तक पहुंचना लगभग असंभव है। ऐसे में प्राथमिक कृषि साख समितियां उन्हें सस्ती दरों पर ऋण, बीज, खाद, उपकरण और विपणन की सुविधा देती हैं। भारत के कृषि ऋण वितरण में सहकारी संस्थाओं की हिस्सेदारी 25 प्रतिशत से अधिक है। श्वेत क्रांति की जननी बनी 'अमूल' जैसी सहकारी संस्थाएं इस बात का प्रमाण हैं कि संगठित किसान वैश्विक बाजार में भी प्रतिस्पर्धा कर सकते हैं। सहकारिता ने समाज के उस वर्ग को नेतृत्व दिया है जिसे दशकों तक हाशिये पर रखा गया-महिलाओं को। महिला सहकारी समितियों और स्वयं सहायता समूहों ने देश की लाखों महिलाओं को न केवल आर्थिक रूप से सशक्त किया, बल्कि उन्हें सामाजिक निर्णयों में भागीदारी का अधिकार भी दिलाया। वर्तमान में 1.8 लाख से अधिक महिला सहकारी समितियां देश में कार्यरत हैं और 75 लाख से अधिक स्वयं सहायता समूहों में से अधिकांश महिलाओं द्वारा संचालित हैं।

इन समूहों के माध्यम से 1.5 लाख करोड़ से अधिक का ऋण वितरित किया जा चुका है, जिसने महिलाओं को खाद्य प्रसंस्करण, दस्तकारी, दुग्ध व्यवसाय और कुटीर उद्योग जैसे क्षेत्रों में आत्मनिर्भर बनाया है। डिजिटल युग में सरकार ने 'सहकार से समृद्धि' अभियान के तहत सहकारी संस्थाओं को आधुनिक तकनीक, पारदर्शिता और जवाबदेही से जोड़ने की दिशा में कई कदम उठाए हैं। सहकारिता मंत्रालय के नेतृत्व में डिजिटल कोऑपरेशन पोर्टल, सहकार मित्र एप और राष्ट्रीय सहकारी नीति जैसे नवाचार सामने आए हैं। भारत सरकार ने त्रिभुवन सहकारिता विश्वविद्यालय की स्थापना का निर्णय लिया है, जो देश का पहला सहकारिता विश्वविद्यालय होगा। देश के कई राज्यों में युवाओं ने सहकारी समूह बनाकर टैक्सी सेवाएं शुरू की हैं। जिस दिन भारत के प्रत्येक गांव में सहकारिता केवल संस्था नहीं, बल्कि जीवनशैली बन जाएगी, उस दिन हम सच्चे अर्थों में आत्मनिर्भर और सहभागी भारत की ओर बढ़ेंगे-एक ऐसा भारत, जहां समृद्धि अकेले नहीं आती, बल्कि सभी को साथ लेकर चलती है।

ब्रेन ट्यूमर का खतरा कम करते हैं ये योगासन

मस्तिष्क में या उसके आसपास के ट्यूमर को ब्रेन ट्यूमर कहा जाता है। ब्रेन ट्यूमर मस्तिष्क के टिशूज़ में बनता है। आस-पास की संरचनाओं में पिट्यूटरी ग्लैंड, पीनियल ग्लैंड, और मेम्ब्रेन शामिल हैं जो मस्तिष्क की सतह को कवर करती हैं। प्राथमिक ब्रेन ट्यूमर कई रूप ले सकता है। मस्तिष्क में कुछ ट्यूमर पूरी तरह से हानिरहित होते हैं। इसलिए हर साल विश्व ब्रेन ट्यूमर दिवस 8 जून को मनाया जाता है। मस्तिष्क या उसके आसपास की कोशिकाओं में अनियंत्रित वृद्धि ब्रेन ट्यूमर का कारण बनती है। एक रिपोर्ट के अनुसार दुनियाभर में 10 लाख से अधिक लोग ब्रेन ट्यूमर के साथ जी रहे हैं। ब्रेन ट्यूमर के बढ़ते वैश्विक जोखिमों के बारे में लोगों को जागरूक करने और बचाव को लेकर शिक्षित करने के उद्देश्य से हर साल ब्रेन ट्यूमर डे को वैश्विक स्तर पर मनाया जाता है। समय रहते सावधानी और स्वास्थ्य की देखभाल से इस बीमारी के खतरे को कम किया जा सकता है। योग, खासकर कुछ विशेष आसन मस्तिष्क को शांत करने, तंत्रिका तंत्र को मजबूत करने और शरीर में रक्त संचार को बेहतर करने में मदद करते हैं, जिससे ब्रेन ट्यूमर जैसी बीमारियों के खतरे को कुछ हद तक कम किया जा सकता है। कुछ असरदार योगासन हैं जो ब्रेन ट्यूमर के खतरे को कम करने के साथ ही मस्तिष्क को सेहतमंद रखने में मदद करते हैं।

प्राणायाम

प्राणायाम को आम तौर पर सांस नियंत्रण की प्रक्रिया समझा जाता है। प्राणायाम में किए जाने वाले अभ्यास को देख कर यह ठीक ही लगता है, परंतु इसके पीछे सच बात कुछ और ही है। प्राणायाम दो शब्दों के मेल से बना है- प्राण और आयम। प्राण का मतलब महत्वपूर्ण ऊर्जा या जीवन शक्ति है। वह शक्ति जो सभी चीजों में मौजूद है, चाहे वो जीवित हो या निर्जीव। प्राणायाम श्वास के माध्यम से यह ऊर्जा शरीर की सभी नाड़ियों में पहुंचाती है। यम शब्द का अर्थ है नियंत्रण और योग में इसे विभिन्न नियमों या आचार को निरूपित करने के लिए प्रयोग किया जाता है। मगर प्राणायाम शब्द में प्राण के साथ यम नहीं आयम की संधि की गयी है। आयम का मतलब है एक्सटेंशन या विस्तार करना। तो इसलिए प्राणायाम का सही मतलब है प्राण का विस्तार करना। प्राणायाम दिमाग को स्वस्थ रखता है। इसमें विशेषकर अनुलोम-विलोम, भ्रामरी प्राणायाम और कपालभाति प्राणायाम अभ्यास मस्तिष्क की कोशिकाओं को शुद्ध ऑक्सीजन पहुंचाने में सहायक हैं। यह तनाव को कम कर मानसिक शांति देते हैं। तंत्रिका तंत्र को संतुलित करते हैं, जिससे ब्रेन की फंक्शनिंग बेहतर होती है। भ्रमण प्राणायाम का अभ्यास भी कर सकते हैं, जिससे नकारात्मक भावनाएं जैसे क्रोध, झुंझलाहट, निराशा और चिंता से मुक्ति मिल सकती है। वहीं एकाग्रता, स्मृति और आत्म विश्वास में बढ़ावा होता है।

ताड़ासन

इस आसन के नियमित अभ्यास से शरीर की मांसपेशियां लचीली होती हैं। आसन के अभ्यास के दौरान गहरी सांस लेने की वजह से फेफड़ों में फैलाव आता है, जिससे इसकी सफाई होती है। इस आसान को करने से एकाग्रता बनी रहती है और श्वास संतुलित रहती है। इसे करने से ब्रेन ट्यूमर में राहत मिलती है। इसे करने के लिए दोनो पंजों को मिलाकर खड़े हो जायें, और बाजुओं को बगल में रखें। शरीर को स्थिर करें और शरीर का वजन दोनों पैरों पर समान रूप से वितरित करें। भुजाओं को सिर के उपर उठाएं। सिर के स्तर से थोड़ा ऊपर दीवार पर एक बिंदु पर आंखें टीका करें रखें। पुर अभ्यास के दौरान आंखें इस बिंदु पर टिका कर रखें। बाजुओं, कंधों और छाती को ऊपर की तरफ खींचें और फैलाएं। पैर की उंगलियों पर आ जायें ताकि दोनों एड़ी उपर उठ जायें। बिना संतुलन और बिना पैरों को हिलायें, पूरे शरीर को ऊपर से नीचे तक ताने। श्वास लेते रहें और कुछ सेकंड के लिए इस मुद्रा में ही रहें। शुरुआत में संतुलन बनाए रखना मुश्किल हो सकता है लेकिन अभ्यास के साथ यह आसान हो जाएगा।

शीर्षासन

यह योगासन मस्तिष्क तक रक्त प्रवाह को बढ़ाता है, जिससे दिमाग को ज्यादा ऑक्सीजन मिलती है। शीर्षासन ध्यान और एकाग्रता को बेहतर करता है। और सोचने की क्षमता को बेहतर बनाता है। साथ ही तनाव और चिंता को कम करने में सहायक है। यह मानसिक संतुलन को मजबूत करता है। ध्यान रखें कि यह आसन प्रशिक्षक की देखरेख में ही करें, खासकर यदि आपको ब्लड प्रेशर या सर्वाइकल की समस्या है। शीर्षासन में जब सिर की ओर हम उल्टा खड़े होते हैं, तो हृदय से मस्तिष्क तक रक्त का प्रवाह बढ़ जाता है, जिससे ब्लड प्रेशर संतुलित रहता है। इसका असर त्वचा और बालों पर भी दिखाई देता है, त्वचा में चमक आती है, बालों का झड़ना कम होता है और कई तरह की त्वचा संबंधित समस्याएं भी धीरे-धीरे दूर होने लगती हैं। इसके अलावा इस आसन से पाचन तंत्र को काफी फायदा मिलता है। यह आसन पेट से जुड़ी समस्याओं जैसे कब्ज, गैस और अपच को दूर करने में मदद करता है।

हंसना मना है

भक्त : बाबा पढ़ा लिखा हूं पर नौकरी नहीं मिलती क्या करूं? बाबा : कहां तक पढ़े हो? भक्त : बाबा मैने बीए किया है! बाबा : एक बार और बीए कर लो, दो बार करने से बाबा बन जाओगे फिर तुम्हें नौकरी की जरूरत ही नहीं पड़ेगी।

पप्पू लड़की देखने गया, पप्पू : कितने तक पढ़ी हो, लड़की : बीए तक। पप्पू ने शादी से मना कर दिया और बोला, दो अक्षर पढ़ें हैं वो भी उल्टे।

एक रात एक घर में चोर घुस आया। खटपट सुनकर मालिक की आंख खुल गई। मालिक : कौन है? चोर : म्याऊं। मालिक : कौन है? चोर : म्याऊं। मालिक : कौन है? चोर : अबे बिल्ली हूं बिल्ली।

टीचर : पानी में रहने वाले 5 जानवरों के नाम बताओ? पप्पू : मेंढ़क, टीचर : और, पप्पू : उसकी मां, बाप, बहन और भाई! टीचर गुस्से से लाल पीली हो गई।

पप्पू : मेरा एक पड़ोसी है जिसका नाम भगवान है और उसकी बेटी का नाम पूजा है। मम्मी कहती थी कि भगवान की पूजा में मन लगाया कर। अब मम्मी को कैसे बताऊं कि पूजा में तो मन लग गया है लेकिन भगवान नहीं मान रहा।

कहानी | संघर्ष का महत्व

एक बार एक किसान परमात्मा से बड़ा नाराज हो गया। कभी बाढ़ आ जाये, कभी सूखा पड़ जाए, कभी धूप बहुत तेज हो जाए तो कभी ओले पड़ जाये। हर बार कुछ ना कुछ कारण से उसकी फसल थोड़ी खराब हो जाये। एक दिन बड़ा तंग आ कर उसने परमात्मा से कहा- देखिये प्रभु, आप परमात्मा हैं, लेकिन लगता है आपको खेती बाड़ी की ज्यादा जानकारी नहीं है, एक प्रार्थना है कि एक साल मुझे मौका दीजिये, जैसा मैं चाहूं वैसा मौसम हो, फिर आप देखना मैं कैसे अन्न के भण्डार भर दूंगा। परमात्मा मुस्कुराये और कहा- ठीक है, जैसा तुम कहोगे वैसा ही मौसम दूंगा, मैं दखल नहीं करूंगा। अब, किसान ने गेहूं की फसल बोई, जब धूप चाही, तब धूप मिली, जब पानी चाही तब पानी। तेज धूप, ओले, बाढ़, आंधी तो उसने आने ही नहीं दी, समय के साथ फसल बढ़ी और किसान की खुशी भी, क्योंकि ऐसी फसल तो आज तक नहीं हुई थी। किसान ने मन ही मन सोचा अब पता चलेगा परमात्मा को की फसल कैसे करते हैं, बेकार ही इतने बरस हम किसानों को परेशान करते रहे। फसल काटने का समय भी आया, किसान बड़े गर्व से फसल काटने गया, लेकिन जैसे ही फसल काटने लगा ,एकदम से छाती पर हाथ रख कर बैठ गया! गेहूं की एक भी बाली के अन्दर गेहूं नहीं था, सारी बालियां अन्दर से खाली थीं, बड़ा दुखी होकर उसने परमात्मा से कहा-प्रभु ये क्या हुआ? तब परमात्मा बोले-ये तो होना ही था, तुमने पौधों को संघर्ष का जरा सा भी मौका नहीं दिया। ना तेज धूप में उनको तपने दिया, ना आंधी ओलों से जूझने दिया, उनको किसी प्रकार की चुनौती का अहसास जरा भी नहीं होने दिया, इसीलिए सब पौधे खोखले रह गए। जब आंधी आती है, तेज बारिश होती है ओले गिरते हैं तब पौधा अपने बल से ही खड़ा रहता है, वो अपना अस्तित्व बचाने का संघर्ष करता है और इस संघर्ष से जो बल पैदा होता है वो ही उसे शक्ति देता है, उर्जा देता है, उसकी जीवटता को उभारता है। सोने को भी कुंदन बनने के लिए आग में तपने, हथौड़ी से पिटने, गलने जैसी चुनोतियों से गुजरना पड़ता है तभी उसकी स्वर्णिम आभा उभरती है, उसे अनमोल बनाती है।

7 अंतर खोजें

पंडित संदीप आत्रेय शास्त्री

जानिए कैसा रहेगा कल का दिन

लेखक प्रसिद्ध ज्योतिषविद हैं। सभी प्रकार की समस्याओं के समाधान के लिए कॉल करें-9837081951

मेष दूर से शुभ समाचार प्राप्त होंगे। घर में मेहमानों का आगमन होगा। आत्मविश्वास में वृद्धि होगी। जोखिम उठाने का साहस कर पाएंगे। व्यापार में लाभ होगा। निवेश शुभ रहेगा।

वृषभ किसी आनंदोत्सव में भाग लेने का अवसर प्राप्त होगा। विद्यार्थी वर्ग सफलता हासिल करेगा। मनपसंद भोजन का आनंद मिलेगा। व्यापार में वृद्धि के योग हैं। निवेश शुभ रहेगा।

मिथुन अचानक व्ययवृद्धि से तनाव रहेगा। बजट बिगड़ेगा। दूर से शोक समाचार मिल सकता है, धैर्य रखें। किसी महत्वपूर्ण निर्णय लेने में जल्दबाजी न करें।

कर्क कष्ट, भय, चिंता व तनाव का वातावरण बन सकता है। जीवनसाथी पर अधिक मेहरबान होंगे। कोर्ट व कचहरी के कार्यों में अनुकूलता रहेगी। धनार्जन होगा।

सिंह तरक्की के अवसर प्राप्त होंगे। भूमि व भवन संबंधी बाधा दूर होगी। आय में वृद्धि होगी। मित्रों के साथ बाहर जाने की योजना बनेगी। रोजगार प्राप्ति के योग हैं।

कन्या यात्रा सफल रहेगी। शारीरिक कष्ट हो सकता है। बेचैनी रहेगी। नई योजना बनेगी। लोगों की सहायता करने का अवसर प्राप्त होगा। सामाजिक प्रतिष्ठा में वृद्धि होगी।

तुला अप्रत्याशित खर्च सामने आएंगे। कर्ज लेने की स्थिति बन सकती है। पुराना रोग बाधा का कारण बन सकता है। अपेक्षित कार्यों में विलंब हो सकता है। कार्य पर ध्यान दें।

वृश्चिक कोई राजकीय बाधा हो सकती है। जल्दबाजी में कोई भी गलत कार्य न करें। विवाद से बचें। काफी समय से अटका हुआ पैसा मिलने का योग है, प्रयास करें।

धनु किसी की बातों में न आएं। रोजगार प्राप्ति के प्रयास सफल रहेंगे। नवीन वस्त्राभूषण पर व्यय होगा। अचानक लाभ के योग हैं। व्यावसायिक यात्रा सफल रहेगी।

मकर परिवार की आवश्यकताओं के लिए भागदौड़ तथा व्यय की अधिकता रहेगी। वाहन व मशीनरी के प्रयोग में विशेष सावधानी की आवश्यकता है। दूसरों के झगड़ों में न पड़ें।

कुम्भ जोखिम व जमानत के कार्य टालें। शारीरिक कष्ट संभव है। व्यवसाय धीमा चलेगा। यापार ठीक चलेगा। नौकरी में उच्चाधिकारी की नाराजी झेलनी पड़ सकती है।

मीन किसी अपरिचित की बातों में न आएं। धनहानि हो सकती है। थोड़े प्रयास से ही काम सफल रहेंगे। मित्रों की सहायता करने का अवसर प्राप्त होगा।

बॉलीवुड | मन की बात

लोग अब वेब सीरीज में इंटीमेंट सीन देखकर थक गये हैं: परेश रावल

परेश रावल एक ऐसे एक्टर हैं जो पिछले कुछ समय से काफी सुर्खियां बटोर रहे हैं। उनकी हेरा फेरी-3 कॉन्ट्रोवर्सी किसी से नहीं छिपी है। एक्टर हमेशा से अपनी बातों को सीधे तौर पर बिना किसी झिझक रखते आए हैं। अब परेश रावल ने एक और गंभीर मुद्दा उठाते हुए अपनी राय रखी है। उनका कहना है कि वेब सीरीज में दिखाए जाने वाले इंटीमेट सीन्स और गालियां बिना मतलब के होते हैं। हाल ही में परेश रावल एक इंटरव्यू में फिल्मों और वेब सीरीज के अंदर दिखाए जाने कंटेंट पर बात करते नजर आए। जब उनसे पूछा गया कि आज के समय में ओटीटी के कारण कंटेंट काफी खराब हो रहा है और पॉलिटिकल पार्टियां उन्हें संस्कारी बनाने की कोशिश कर रही है। तो इसपर एक्टर ने उदाहरण देते हुए कहा, मैं आपको एक चुटकुला सुनाता हूं। एक औरत ने पुलिस स्टेशन जाकर शिकायत की कि हमारे सामने वाली बिल्डिंग में एक आदमी बिना कपड़ों के घूम रहा है। पुलिस वाले ने आकर जब चेक किया तो उन्होंने पूछा कि मैडम कहां है? तो औरत ने कहा कि आप स्टूल पर चढ़कर देखिए। तो आपको जहां गंदगी देखनी है, वहां आपको मिल ही जाएगी। बात यही है कि आप मत देखिए। जो भी समाज में होता, सिनेमा वही दिखाता है। हम समाज का आइना हैं। लेकिन हमें हमारी विवेक बुद्धी का सही तरीके से इस्तेमाल करना चाहिए। समाज में हर चीज दिखाने लायक नहीं होती। कुछ चीजें आप संकेत या छोटे रूप से भी दिखा सकते हैं। परेश रावल ने आगे वेब सीरीज में दिखाए जाने वाले इंटीमेट सीन्स पर भी बात की। उनका कहना है कि अब ऑडियंस ये सब देखकर पक चुकी है। ये बेमतलब की चीजें मेकर्स ध्यान पाने के लिए डालते हैं। परेश रावल ने कहा, लोग अब पक भी गए थे कि हर दूसरी-तीसरी सीरीज में बेमतलब की गालियां और सेक्स सीन्स आते थे। इनका कहानी या सीन से कोई लेना-देना नहीं होता था। लोगों को लगने लगा कि इससे सभी का ध्यान खींचा जाता है।

गलवान की लड़ाई पर्दे पर दिखाने के लिए तैयार सलमान खान

सलमान खान के फैंस के लिए एक बड़ी गुड न्यूज सामने आई है। सिकंदर के बाद, बॉलीवुड के भाईजान ने अपनी अगली फिल्म की ऑफिशियल अनाउंसमेंट कर दी है। उनकी फिल्म बैटल ऑफ गलवान का ऑफिशियल मोशन पोस्टर रिलीज हुआ है जिसमें सलमान का लुक सामने आया। ये फिल्म अपूर्व लाखिया डायरेक्ट करने वाले हैं। इस साल सलमान सिकंदर फिल्म लेकर आए जो बॉक्स ऑफिस पर फ्लॉप साबित हुई। ये फिल्म उनके करियर की भी सबसे बड़ी फ्लॉप थी। सलमान को इस फिल्म से काफी ट्रोलिंग का सामना भी करना पड़ा था। जिसके बाद खबर थी कि उन्होंने करियर से संबंधित कुछ कड़े फैसले लिए। ऐसा सुनने में आया कि सुपरस्टार अब अपूर्व लाखिया संग गलवान वैली पर फिल्म बनाएंगे। पिछले काफी समय से इससे जुड़ी अपडेट्स भी सामने आईं।

हाल ही में सलमान ने एक पोस्ट शेयर भी किया जिसमें वो अपनी फिल्म का पोस्टर टीज करते नजर आए। अब फाइनली वो इसे ऑफिशियली सभी के सामने प्रेजेंट कर चुके हैं। इस अनाउंसमेंट टीजर में उनका पूरा चेहरा खून से लथपथ नजर आता है। सलमान के हाथ में एक हथियार भी है जिससे वो दुश्मनों का खात्मा कर रहे हैं। उनकी आंखों में एक किस्म की आग नजर आई जिसने उनके लुक को और भी बेहतरीन बनाया। फिल्म में सलमान कर्नल बी। संतोष बाबू की भूमिका निभाएंगे। उनके साथ एक्ट्रेस चित्रांगदा सिंह भी शामिल हैं।

सलमान ने अभी फिल्म का सिर्फ पोस्टर शेयर किया है जिसने फैंस के बीच में एक्साइटमेंट पैदा कर दी है। ये पहला मौका है जब वो और अपूर्व लाखिया साथ एक फिल्म में काम करेंगे। सलमान की फिल्म गलवान घाटी में लड़ी गई उस लड़ाई की कहानी है जिसमें भारत ने बिना गोलियों का इस्तेमाल करके कई चीनी सैनिकों को मौत के घाट उतारा था। गलवान घाटी की लड़ाई 15 जून 2020 के दिन भारत और चीन की सेना के बीच लद्दाख में गलवान नदी घाटी पर लड़ी गई थी।

ये झड़प तब शुरू हुई जब भारतीय सैनिकों ने चीनी सैनिकों को एक गश्ती बिंदु से हटने के लिए कहा, जो कथित तौर पर भारतीय क्षेत्र में घुसपैठ कर रहे थे। दोनों सेनाओं के बीच इस दौरान खूब हाथापाई हुई जिसमें लाठियों, पत्थरों और नुकीली चीजों का इस्तेमाल हुआ। इस लड़ाई में 20 भारतीय सैनिक शहीद हो गए थे, जिनमें 16 बिहार रेजिमेंट के कमांडिंग ऑफिसर कर्नल संतोष बाबू भी शामिल थे। बताया जाता है कि इस झड़प में चीन के 43 सैनिक मारे गए थे।

11 जुलाई को रिलीज होगी फिल्म आंखों की गुस्ताखियां

विक्रांत मैसी और शनाया कपूर की फिल्म आंखों की गुस्ताखियां थिएटर में रिलीज होने के लिए तैयार है। फिल्म का ट्रेलर रिलीज हो चुका है, जिसे फैन्स का भरपूर प्यार मिल रहा है। ट्रेलर देखने के बाद लोग कयास लगा रहे हैं कि आने वाले फाइडे सिनेमाघरों में एक अच्छी मूवी देखने को मिलेगी। ट्रेलर देखकर फैन्स शनाया की एक्टिंग की भी काफी तारीफ कर रहे हैं। फिल्म को मंसी बागला ने प्रोड्यूस किया है। बहुत कम लोग जानते होंगे कि उन्होंने फिल्म बनाने के लिए अपना सबकुछ दांव पर लगा दिया है।

मंसी का कहना है कि आंखों की गुस्ताखियां की शूटिंग पूरी करने के लिए उन्हें अपने गहने और घर बेचना पड़ा। वो कहती हैं- हां एक वक्त ऐसा आया था जब शूट पूरा करने के लिए मैंने अपने गहने बेच दिए। मुझे मेरा दूसरा घर भी बेचना पड़ा। पर मुझे ये सब करने का कोई पछतावा नहीं है।

उन्होंने ये भी बताया कि उन्हें कास्टिंग और राइटिंग का काफी शौक है। मंसी कहती हैं कि मैंने फिल्म को इस तरह प्रोड्यूस किया है, जैसे कोई बच्चा पैदा करता है। मुझे पता है कि मेरा दिल इस जगह बिल्कुल सही है। मंसी ने अपने करियर के लिए जो किया, वो करना हर किसी के बस की बात नहीं है। विक्रांत और शनाया की फिल्म 11 जुलाई को सिनेमाघरों में रिलीज हो रही है।

अजब-गजब | इस देश में है शादी की अनोखी परंपरा

इस देश में जुड़वा भाई-बहन आपस में ही करते हैं शादी, मां-बाप बनते हैं सास-ससुर!

थाईलैंड, एक ऐसा देश जो अपनी समृद्ध संस्कृति, खूबसूरत मंदिरों और अनोखी परंपराओं के लिए जाना जाता है, एक बार फिर चर्चा में है। यहां की एक ऐसी परंपरा ने दुनिया भर का ध्यान खींचा है, जिसमें जुड़वां भाई-बहन की शादी करवाई जाती है। यह सुनने में जितना अजीब लगता है, उतना ही यह स्थानीय समुदायों के लिए पवित्र और महत्वपूर्ण है। इस परंपरा के पीछे बौद्ध धर्म की मान्यताएं और पिछले जन्म की कहानियां हैं, जो इसे और भी रोचक बनाती है।

थाईलैंड के कुछ समुदायों, खासकर समुत प्राकान जैसे क्षेत्रों में, यह मान्यता प्रचलित है कि अगर एक ही मां के गर्भ से जुड़वां भाई और बहन पैदा होते हैं, तो वे पिछले जन्म में प्रेमी थे। बौद्ध धर्म के पुनर्जनन सिद्धांत के अनुसार, इन जुड़वां बच्चों का जन्म एक साथ इसलिए होता है क्योंकि उनके बीच पिछले जन्म का कोई अधूरा रिश्ता या कर्म बाकी है। यह माना जाता है कि अगर इन बच्चों की आपस में

प्रतीकात्मक शादी ना करवाई जाए, तो उनकी जिंदगी में असफलता, बीमारी या अशांति आ सकती है। इसलिए, जैसे ही जुड़वां बच्चे 6 से 8 साल की उम्र के होते हैं, उनके माता-पिता एक भव्य समारोह में उनकी शादी करवाते हैं।

इस अनोखी शादी में सभी पारंपरिक रस्में निभाई जाती हैं, जो एक सामान्य थाई शादी में होती है। उदाहरण के लिए, 2018 में समुत प्राकान में 6 साल के जुड़वां भाई-बहन, जिनके उपनाम गिटार और कीवी थे, की शादी हुई थी। इस समारोह में लड़के को दूल्हे की तरह सजाया गया और उसे 200,000 थाई बाह्ट (लगभग 5 लाख रुपये) और सोने के गहनों के रूप में दहेज देना प?ा। लड़की को दुल्हन की तरह सजाया गया और समारोह में पारंपरिक नृत्य, संगीत और भोज का आयोजन किया गया। माता-पिता, जो इस शादी में सास-ससुर की भूमिका निभाते हैं, इस रस्म को बड़े उत्साह के साथ पूरा करते हैं।

हालांकि यह शादी समारोह भव्य और सांस्कृतिक रूप से महत्वपूर्ण होता है, लेकिन यह कानूनी रूप से मान्य नहीं है। थाईलैंड के परिवार कानून के तहत, सगी भाई-बहन या नजदीकी रक्त संबंधियों के बीच विवाह निषिद्ध है। यह शादी केवल एक प्रतीकात्मक रस्म है, जिसका उद्देश्य बच्चों के भविष्य को सुखी और समृद्ध बनाना है। समारोह के बाद, बच्चे सामान्य जीवन जीते हैं और बड़े होने पर अपनी पसंद के साथी से शादी कर सकते हैं।

दुनिया की सबसे छोटी चिड़िया का नाम? देखकर आंखों पर नहीं होगा यकीन!

हम सभी ने आसमान में उड़ते बड़े-बड़े बाज और रंग-बिरंगे तोते देखे हैं, लेकिन क्या आपने कभी सोचा है कि दुनिया का सबसे छोटा उड़ने वाला जीव कैसा दिखता होगा? प्रकृति ने अपनी कलाकारी का अद्भुत नमूना दिखाते हुए एक ऐसा नन्हा पक्षी बनाया है, जो बिल्कुल पिद्दी यानी इतना छोटा है कि उसे देखकर आपकी आंखों को भी यकीन नहीं होगा. ये महज एक चिड़िया नहीं, बल्कि पंखों वाला एक छोटा-सा नगीना है। ये हमारे सामने आ भी जाए, तो हम शायद पहचान नहीं पाएंगे। हालांकि, ये पक्षी भारत में नहीं मिलता। अब आप सोच रहे होंगे कि आखिर ये कौन सी चिड़िया है। ऐसे में बता दें कि इसका नाम बी हमिंगबर्ड है, जिसे दुनिया का सबसे छोटा पक्षी कहा जाता है। बी हमिंगबर्ड क्यूबा के घने जंगलों और बगीचों में पाया जाता है, जिसकी लंबाई केवल 5 से 6 सेंटीमीटर तक होती है! एक तरह से छोटी उंगली से भी छोटी। इसका वजन तो और भी चौंकाने वाला है, महज 1।5 से 2 ग्राम, जो दाने चावल के वन के बराबर है। इसी वजह से इसे अक्सर मधुमक्खी समझ लिया जाता है, क्योंकि ये उड़ते समय बिल्कुल वैसी ही आवाज़ निकालता है और आकार में भी मधुमक्खी जितना ही होता है। लेकिन इस नन्ही चिड़िया की खासियतें हैरान कर देने वाली हैं। जहां ज्यादातर पक्षी केवल आगे की ओर उड़ सकते हैं, वहीं बी हमिंगबर्ड में पीछे की ओर उड़ने की अद्भुत क्षमता है। यह अपनी चोंच को फूल के अंदर डालकर उसे चूसने के बाद तुरंत पीछे हट सकता है और अगले फूल पर जा सकता है। इसके पंखों की फड़फड़ाहट इतनी तेज़ होती है कि आप इसे नंगी आंखों से ठीक से देख भी नहीं सकते। यह 1 सेकंड में 80 बार से भी ज्यादा अपने पंख फड़फड़ाता है और कभी-कभी तो उड़ते समय इसके पंख फड़फड़ाने की गति 200 प्रति सेकंड तक पहुंच जाती है! इसी तेज़ी के कारण इसके पंखों की आवाज़ बिल्कुल मधुमक्खी के भिनभिनाने जैसी लगती है। बता दें कि बी हमिंगबर्ड नर और मादा में काफी अंतर होता है। नर ज्यादा चमकीले होते हैं, जिनके सिर और गले पर इंद्रधनुषी, लाल या नारंगी रंग के पंख होते हैं जो सूरज की रोशनी में जगमगाते हैं। वहीं, मादा का रंग थोड़ा हल्का होता है और उसमें नर वाले चमकीले निशान नहीं होते। इतना ही नहीं, बी हमिंगबर्ड अपना घोंसला भी बहुत ही खूबसूरती से बनाते हैं, जो मकड़ी के जालों, पेड़ों की छाल के टुकड़ों से बनाया जाता है।

गरीबों से वोट छीनने की साजिश

मतदाता पुनरीक्षण पर भड़कीं पूर्व सीएम राबड़ी देवी

» अचानक एक महीने में प्रक्रिया पूरी करने का दबाव बना रही बीजेपी

4पीएम न्यूज़ नेटवर्क

पटना। बिहार की पूर्व मुख्यमंत्री और विपक्ष की नेता राबड़ी देवी ने अपील की कि वे विशेष मतदाता सूची पुनरीक्षण अभियान के दौरान चुनाव अधिकारियों को वोटर आईडी कार्ड के अलावा कोई अन्य दस्तावेज न दिखाएं। राबड़ी देवी ने यह बयान पटना के बापू सभागार में आयोजित राजद की 28वीं स्थापना दिवस के मौके पर आयोजित राष्ट्रीय परिषद की बैठक में दिया। उन्होंने केंद्र और राज्य सरकार पर निशाना साधते हुए कहा, देश को बेचने की साजिश चल रही है।

अब गरीबों से वोट देने का अधिकार भी छीना जा रहा है। बिहार विधानसभा चुनाव में सिर्फ तीन महीने बचे हैं और इस दौरान गरीबों को मतदाता सूची से बाहर करने की योजना बनाई जा रही है। राबड़ी देवी ने कहा, मैं राज्यभर से आए लोगों से कहना चाहती हूं कि वोटर आईडी के अलावा कोई और दस्तावेज न दिखाएं। यदि कोई अधिकारी मांगे, तो साफ मना कर दें। उन्होंने मतदाता पुनरीक्षण प्रक्रिया में अन्य दस्तावेजों की मांग को अन्यायपूर्ण बताया। उन्होंने सवाल उठाते हुए कहा, अधिकारियों द्वारा माता-पिता का जन्म प्रमाण पत्र मांगा जा रहा है। जिन लोगों ने अपने परिवार को वर्षों पहले खो दिया है, वे कहां से यह प्रमाण पत्र लाएंगे।

वहीं बैठक में पार्टी संस्थापक लालू प्रसाद यादव को एक बार फिर राष्ट्रीय अध्यक्ष के रूप में निर्विरोध चुने जाने का प्रमाण पत्र भी सौंपा गया। इस अवसर पर पार्टी के नेता तेजस्वी यादव, देशभर से आए कार्यकर्ता और नेता, और केरल इकाई के प्रमुख एमवी श्रेयम्स कुमार समेत हजारों की संख्या में लोग उपस्थित रहे। राबड़ी देवी ने यह भी कहा कि इस तरह की विशेष पुनरीक्षण प्रक्रिया पिछले 20 वर्षों में नहीं हुई। पिछले 11 वर्षों से प्रधानमंत्री नरेंद्र मोदी सत्ता में हैं, तब कभी इसकी आवश्यकता नहीं पड़ी। लेकिन अब चुनाव से ठीक पहले अचानक एक महीने में यह प्रक्रिया पूरी करने का दबाव बनाया जा रहा है।

विपक्ष को चुनाव प्रक्रिया पर भी भरोसा नहीं : गुरु प्रकाश

भाजपा के राष्ट्रीय प्रवक्ता गुरु प्रकाश ने कहा कि विपक्षी दलों को अब भारत की चुनाव प्रक्रिया पर भी भरोसा नहीं रह गया है। वे चुनाव आयोग जैसी संवैधानिक संस्था को निशाने पर लेकर जनता को भ्रमित कर रहे हैं। गुरु प्रकाश ने कहा कि मतदाता पुनरीक्षण एक पूरी तरह से संवैधानिक प्रक्रिया है, जिसे संविधान के अनुच्छेद 325 और 326 के तहत लागू किया गया है। बिहार में कुल 7.9 करोड़ मतदाता हैं, जिनमें से लगभग 5 करोड़ मतदाताओं को किसी तरह के दस्तावेज देने की आवश्यकता नहीं है, केवल शेष मतदाताओं से ही पहचान पत्र मांगा जा रहा है। उन्होंने स्पष्ट किया कि आधार कार्ड केवल एक निवास प्रमाण हो सकता है, लेकिन इससे नागरिकता साबित नहीं होती। नागरिकता के लिए अलग तरह के दस्तावेज जरूरी होते हैं। ऐसे में विपक्ष द्वारा आधार कार्ड को एकमात्र दस्तावेज मानने की मांग आधारहीन है। उन्होंने आरोप लगाया कि महागठबंधन के नेता मतदाता पुनरीक्षण प्रक्रिया का विरोध सिर्फ इसलिए कर रहे हैं क्योंकि उन्हें अब लोकतंत्र पर भी विश्वास नहीं रहा। गुरु प्रकाश ने बताया कि राज्यभर में करीब 50 लाख बीएलओ इस काम में लगे हुए हैं और मतदाता सूची को शुद्ध करने का काम तेज़ी से किया जा रहा है।

कांग्रेस ने असम के लिए गठित की राजनीतिक मामलों की समिति

» प्रदेश अध्यक्ष गोगोई ने पार्टी पदाधिकारियों के नाम किये घोषित

4पीएम न्यूज़ नेटवर्क

गुवाहाटी। कांग्रेस ने अपनी असम इकाई में फेरबदल करते हुए अपनी राजनीतिक मामलों की समिति का रविवार को गठन किया और प्रमुख पदाधिकारियों के साथ-साथ जिला इकाई प्रमुखों की नियुक्ति की। गौरव गोगोई को पार्टी की राज्य इकाई का अध्यक्ष बनाए जाने के कुछ सप्ताह बाद और अगले वर्ष होने वाले विधानसभा चुनावों से पहले यह फेरबदल किया गया है। एक आधिकारिक बयान में कहा गया कि कांग्रेस अध्यक्ष मल्लिकार्जुन खरगे ने राजनीतिक मामलों की समिति के गठन और असम प्रदेश कांग्रेस कमेटी के पदाधिकारियों एवं जिला कांग्रेस समिति के अध्यक्षों की नियुक्ति के प्रस्ताव को तत्काल प्रभाव से मंजूरी दे दी है।

असम के प्रभारी एआईसीसी महासचिव जितेंद्र सिंह को 19 सदस्यीय राजनीतिक कार्रवाई समिति का अध्यक्ष नामित किया गया है, जिसमें असम कांग्रेस प्रमुख गौरव गोगोई, देबब्रत सैकिया, भूपेन बोरा, प्रद्युत बोरदोलोई, रकीबुल हुसैन और रिपुन बोराह जैसे अन्य लोग शामिल हैं। इससे पहले असम कांग्रेस प्रमुख ने राज्य सरकार द्वारा स्थानीय लोगों को हथियार लाइसेंस देने के फैसले की निंदा करते हुए कहा कि यह शासन नहीं बल्कि ''अराजकता और जंगल राज'' की ओर एक ''खतरनाक कदम'' है। गोगोई ने कहा कि सीएम को तुरंत इस फैसले को वापस लेना चाहिए।

भजनलाल नहीं रहेंगे पांच साल सीएम

» कांग्रेस प्रदेश अध्यक्ष डोटासरा बोले- देखते हैं, पर्ची कब बदलेगी

4पीएम न्यूज़ नेटवर्क

जयपुर। राजस्थान कांग्रेस प्रदेशाध्यक्ष गोविंद सिंह डोटासरा ने मुख्यमंत्री भजनलाल शर्मा और भारतीय जनता पार्टी पर तीखा राजनीतिक हमला बोला है। डोटासरा ने कहा कि भजनलाल किसी भी सूरत में पांच साल तक मुख्यमंत्री नहीं रह सकते। उन्होंने दावा किया कि भले ही भाजपा सरकार अपना कार्यकाल पूरा कर ले, लेकिन मौजूदा मुख्यमंत्री को कार्यकाल के बीच में ही बदला जाएगा।

डोटासरा ने कहा, सरकार में अनिर्णय की स्थिति है। ऊपर से अक्षम 'कच्ची पर्ची' आ गई है, जिसने प्रदेश का बेड़ा गर्क कर दिया है। राजस्थान का दुर्भाग्य है कि ऐसे लोगों के हाथों में सत्ता आ गई है, जो प्रशासन चलाने में पूरी तरह अक्षम हैं। भाजपा नेता खुद एक-दूसरे को नीचा दिखाने में लगे हुए हैं। डोटासरा यह बात प्रदेश कांग्रेस मुख्यालय में मीडिया से बातचीत के दौरान कहीं। डोटासरा ने कहा कि पूर्व मुख्यमंत्री अशोक गहलोत को पर्ची बदलने का कोई इनपुट मिला होगा। देखते हैं, पर्ची कब बदलती है।

भाजपा राजनीतिक प्रतिशोध की भावना से काम कर रही

हनुमान बेनीवाल के बंगले की बिजली काटे जाने और नोटिस जारी होने पर डोटासरा ने तीखी प्रतिक्रिया दी। उन्होंने कहा, उनका तो सिर्फ बिजली कनेक्शन काटा गया है, मेरे यहां तो राजनीतिक द्वेष के चलते ईडी भेज दी गई थी। भाजपा राजनीतिक प्रतिशोध की भावना से काम कर रही है और लोकतांत्रिक संस्थाओं का दुरुपयोग कर रही है।

गुजरात में आप की जीत से घबराई भाजपा : केजरीवाल

» आप संयोजक बोले - विधायकों पर झूठे मुकदमें हो रहे हैं

4पीएम न्यूज़ नेटवर्क

नई दिल्ली। आम आदमी पार्टी ने कहा कि बीजेपी गुजरात के विसावदर विधानसभा सीट पर हुए उपचुनाव में मिली करारी हार को बर्दाश्त नहीं कर पा रही है। नतीजे आए चंद दिन ही गुजरें हैं और बीजेपी ने आप विधायक चैतर बसावा को गिरफ्तार कराकर अपनी बौखलाहट जनता के सामने रख दी। आम आदमी पार्टी के राष्ट्रीय संयोजक अरविंद केजरीवाल, गुजरात प्रभारी गोपाल राय, सह प्रभारी दुर्गेश पाठक और प्रदेश अध्यक्ष इशुदान गढ़वी समेत अन्य वरिष्ठ नेताओं ने चैतर बसावा की गिरफ्तारी पर कड़ी प्रतिक्रिया दी है।

आप का कहना है कि विधायक चैतर बसावा द्वारा भ्रष्टाचार उजागर करने पर बीजेपी सरकार बौखला गई है। पहले बीजेपी ने गुंडों से उन पर हमला करवाया। जब वो पुलिस में शिकायत दर्ज कराने गए, तो उन्हीं पर झूठा मुकदमा दर्ज कर गिरफ्तार कर लिया गया. बीजेपी चाहे जितना भी जुल्म करे, आप के नेता और कार्यकर्ता बीजेपी का भ्रष्टाचार गुजरात की जनता के सामने लाने से नहीं डरेंगे। वहीं गुजरात आप के सह प्रभारी दुर्गेश पाठक ने कहा कि जब-जब बीजेपी डरती है, तब-तब पुलिस को आगे करती है। आप विधायक चैतर बसावा ने जब बीजेपी के नेताओं का भ्रष्टाचार बेनकाब किया, तो बौखलाई बीजेपी ने तुरंत पुलिस को आगे कर दिया।

गुजरात के लोग बीजेपी की गुंडागर्दी से परेशान

आम आदमी पार्टी के राष्ट्रीय संयोजक अरविंद केजरीवाल ने विधायक चैतर बसावा की बीजेपी सरकार द्वारा की गई गिरफ्तारी को विसावदर में उसकी हार की बौखलाहट बताया. उन्होंने एक्स पर कहा कि गुजरात में आप विधायक चैतर बसावा को बीजेपी ने गिरफ्तार कर लिया। विसावदर उपचुनाव में आप के हाथों हार के बाद बीजेपी बौखलाई हुई है। अगर उन्हें लगता है कि इस तरह की गिरफ्तारियों से आप डर जाएगी, तो यह उनकी सबसे बड़ी भूल है. गुजरात के लोग अब बीजेपी के कुशासन, बीजेपी की गुंडागर्दी और तानाशाही से परेशान हो चुके हैं, बीजेपी को अब गुजरात की जनता जवाब देगी।

डब्ल्यूटीसी के नए चक्र में भारत का खुला खाता

» इंग्लैंड को 336 रन से मात देकर अंकतालिका में चौथे स्थान पर पहुंचा

4पीएम न्यूज़ नेटवर्क

बर्मिंघम। इंग्लैंड को पांच मैचों की टेस्ट सीरीज के दूसरे मुकाबले में मात देकर भारतीय टीम ने डब्ल्यूटीसी के नए चक्र (2025-27) में खाता खोल लिया। बता दें कि भारत ने इंग्लैंड को दूसरे टेस्ट मैच में 336 रनों से हराकर पांच मैचों की सीरीज में 1-1 की बराबरी हासिल कर ली है। भारत ने बर्मिंघम में पहली बार जीत दर्ज की है। शुभमन गिल की अगुआई वाली भारतीय टीम ने बर्मिंघम का तिलिस्म तोड़ा और एजबेस्टन में तिरंगा लहरा दिया।

भारतीय टीम ने बल्लेबाजों के बाद आकाश दीप की अगुआई में गेंदबाजों के शानदार प्रदर्शन के दम पर इंग्लैंड को दूसरे टेस्ट मैच में हराया। इस जीत के साथ भारत अंक तालिका में चौथे स्थान पर पहुंच गया है। दो मैचों में पहली जीत के साथ उसके खाते में 12 अंक हो गए हैं और अंक प्रतिशत 50 का है। वहीं, इंग्लैंड इस हार के साथ 12 अंक और 50 अंक प्रतिशत के साथ पांचवें स्थान पर खिसक गया। फिलहाल ऑस्ट्रेलिया 12 अंक और 100 अंक प्रतिशत के साथ शीर्ष पर है जबकि श्रीलंका और बांग्लादेश क्रमशः दूसरे और तीसरे स्थान पर हैं। वहीं, वेस्टइंडीज की टीम ऑस्ट्रेलिया से मिली हार के बाद छठे स्थान पर मौजूद है।

बर्मिंघम में जीत दर्ज करने वाले पहले एशियाई कप्तान बने शुभमन गिल

गिल के नेतृत्व में भारत को पहली बार टेस्ट में जीत मिली। गिल एशिया के पहले कप्तान हैं जिन्होंने इंग्लैंड को बर्मिंघम में मात दी है। भारत की यह विदेश में रनों के लिहाज से टेस्ट में सबसे बड़ी जीत है। इससे पहले उसने 2016 में वेस्टइंडीज के खिलाफ नॉर्थ साउंड में 318 रनों से मैच जीता था। वहीं, रनों के लिहाज से टेस्ट में ओवरऑल उसकी चौथी बड़ी जीत है। गिल को उनकी शानदार पारी के लिए प्लेयर ऑफ द मैच चुना गया है। वहीं गिल 25 साल 301 दिन की उम्र में विदेश में टेस्ट मैच जीतने वाले भारत के सबसे युवा कप्तान बन गए हैं। गिल ने इस मामले में सुनील गावस्कर को पीछे छोड़ा जिन्होंने 26 साल 202 दिन की उम्र में कप्तान के तौर पर विदेश में टेस्ट में जीत दर्ज की थी। गावस्कर ने 1976 में न्यूजीलैंड के खिलाफ ऑकलैंड में ऐसा किया था।

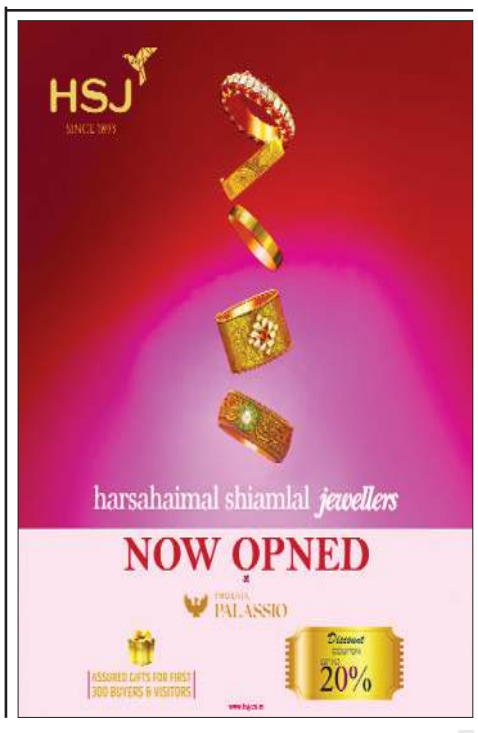

ठाकरे बंधुओं की एकजुटता से उठा सियासी तूफान

शिवसेना यूबीटी ने भाजपा पर किया प्रहार, राउत बोले- फडणवीस और महायुति के अन्य नेता परेशान

4पीएम न्यूज़ नेटवर्क

मुंबई। मुंबई में शनिवार को ठाकरे बंधुओं के मंच पर आने के बाद से पूरे देश सियासी बवंडर आ गया है। जहां स्टालिन से लेकर पवार तक स्वागत कर रहे हैं वहीं बीजेपी कह रही है इससे कोई फर्क नहीं पड़ेगा। राज्यसभा सदस्य संजय राउत ने कहा कि महाराष्ट्र नवनिर्माण सेना के अध्यक्ष राज ठाकरे और शिवसेना (उबाठा) प्रमुख उद्धव ठाकरे के एक साथ आने से मुख्यमंत्री देवेन्द्र फडणवीस सहित सत्तारूढ़ 'महायुति' के नेता घबरा गए हैं।

शिवसेना (उबाठा) से जुड़े राउत ने कहा कि ठाकरे बंधुओं ने शनिवार को भारतीय जनता पार्टी (भाजपा) नीत सरकार द्वारा हिंदी संबंधी सरकारी आदेश वापस लिए जाने का जश्न मनाने के लिए 'विजय' रैली आयोजित की जिससे महायुति के नेता असमंजस में हैं। चचेरे ठाकरे भाइयों ने दो दशकों में पहली बार एक साथ राजनीतिक मंच पर नजर आए थे।इस दौरान उद्धव ने संकेत दिया कि शिवसेना (उबाठा) और मनसे के बीच राजनीतिक गठबंधन हो सकता है। राउत ने कहा, ''महायुति नेता और देवेंद्र फडणवीस ठाकरे बंधुओं के साथ आने से परेशान हैं।शिवसेना-मनसे की जनसभा के बाद फडणवीस ने दावा किया था कि उद्धव ठाकरे ने 'रुदाली' जैसा भाषण दिया है।

राउत ने कहा, ''फडणवीस और (उपमुख्यमंत्री एकनाथ) शिंदे को (ठाकरे बंधुओं के साथ आने पर)अब रोने का कार्यक्रम शुरू करना चाहिए। राज्यसभा सदस्य ने कहा कि महाराष्ट्र ने ''हिंदी थोपे जाने के खिलाफ लड़ाई' जीत ली है। उन्होंने कहा कि दो ठाकरे भाइयों और सहयोगियों की एकता ने यह जीत हासिल की है। राउत ने रैली के बाद कहा कि कई दक्षिण भारतीय राज्यों के नेताओं, विशेष रूप से तमिलनाडु के मुख्यमंत्री एम के स्टालिन ने जोर देकर कहा है कि वे केंद्र से लड़ सकते हैं और ''हिंदी थोपने को उखाड़ फेंक सकते हैं।

हमारी लड़ाई यहीं तक सीमित है : संजय राउत

उद्धव सेना के सांसद संजय राउत ने साफ किया, हिंदी थोपे जाने के खिलाफ उनके (स्टालिन के) रुख का मतलब है कि वे हिंदी नहीं बोलेंगे और न ही किसी को हिंदी बोलने देंगे। लेकिन महाराष्ट्र में हमारा रुख ऐसा नहीं है। हम हिंदी बोलते हैं। हमारा रुख यह है कि प्राथमिक विद्यालयों में हिंदी के लिए सख्ती बर्दाश्त नहीं की जाएगी। हमारी लड़ाई यहीं तक सीमित है। राउत ने यह स्पष्ट करते हुए कि ठाकरे बंधुओं का रुख केवल प्राथमिक विद्यालयों में हिंदी थोपे जाने के खिलाफ है, स्टालिन को उनकी लड़ाई में शुभकामनाएं दीं, साथ ही अपनी सीमा भी खींची। उन्होंने कहा, हमने किसी को हिंदी में बोलने से नहीं रोका है क्योंकि हमारे यहां हिंदी फिल्में, हिंदी थिएटर और हिंदी संगीत है। हमारी लड़ाई केवल प्राथमिक शिक्षा में हिंदी थोपे जाने के खिलाफ है।

स्टालिन ने किया था ठाकरे बंधुओं की एकता का स्वागत

उद्धव और राज ठाकरे के लगभग दो दशकों में पहली बार एक ही मंच पर आने के कुछ घंटों बाद, स्टालिन, जो हिंदी थोपे जाने के मुद्दे पर केंद्र के साथ विवाद में रहे हैं ने इस मुद्दे पर चचेरे भाइयों के रुख का स्वागत किया था।एक्स पर बात करते हुए स्टालिन ने लिखा था, द्रविड़ मुनेत्र कड़गम और तमिलनाडु के लोगों द्वारा हिंदी थोपे जाने को हराने के लिए पीढ़ी दर पीढ़ी छेड़ा गया भाषा अधिकार संघर्ष अब राज्य की सीमाओं को पार कर चुका है और महाराष्ट्र में विरोध के तूफान की तरह घूम रहा है।बिछड़े हुए चचेरे भाइयों के पुनर्मिलन का स्वागत करते हुए स्टालिन ने कहा था, हिंदी थोपे जाने के खिलाफ भाई प्तउद्धवठाकरे के नेतृत्व में आज मुंबई में आयोजित विजय रैली का उत्साह और शक्तिशाली भाषण हमें अपार उत्साह से भर देता है।

स्टालिन के समर्थन में राउत

उद्धव सेना के सांसद संजय राउत ने साफ किया, हिंदी थोपे जाने के खिलाफ उनके (स्टालिन के) रुख का मतलब है कि वे हिंदी नहीं बोलेंगे और न ही किसी को हिंदी बोलने देंगे। लेकिन महाराष्ट्र में हमारा रुख ऐसा नहीं है। हम हिंदी बोलते हैं। हमारा रुख यह है कि प्राथमिक विद्यालयों में हिंदी के लिए सख्ती बर्दाश्त नहीं की जाएगी। हमारी लड़ाई यहीं तक सीमित है।

गोपाल खेमका हत्याकांड में कई ठिकानों पर एसटीएफ का छापा, हिरासत में 2 लोग

4पीएम न्यूज़ नेटवर्क

टना। गोपाल खेमका हत्याकांड मामले में अभी खुलासा नहीं हुआ है, लेकिन पुलिस की जांच तेजी से जारी है। सोमवार (07 जुलाई, 2025) की सुबह एसटीएफ एवं पटना पुलिस की टीम ने फतुहा, दनियावां, दानापुर और वैशाली में छापेमारी की।इस दौरान पुलिस ने दो लोगों को हिरासत में भी लिया है. इससे पहले भी पुलिस कई लोगों को हिरासत में लेकर पूछताछ कर चुकी है।

हालांकि अभी तक इस मामले में मुख्य आरोपी और शूटर को पुलिस गिरफ्तार नहीं कर सकी है। 2018 में गोपाल खेमका के बेटे गुंजन खेमका की हत्या हुई थी और उसी केस से जोड़कर पुलिस इस केस को खंगाल रही है। उस वक्त का मुख्य आरोपी पटना के सुल्तानगंज थाना क्षेत्र का रहने वाला अजय वर्मा था। वह अभी बीते करीब 15 दिन से बेऊर जेल में बंद है। घटना के दूसरे दिन ही पुलिस ने बेऊर जेल में छापेमारी की थी। जो जानकारी मिली है उसके अनुसार अजय वर्मा से पूछताछ की गई थी। जेल में बंद पटना के कई अन्य शूटर से भी पुलिस ने पूछताछ की थी। पुलिस इस पूरे मामले को ना सिर्फ पुराने केस से जोड़कर देख रही है बल्कि अजय वर्मा से जुड़े लोग भी शक के घेरे में हैं। सीसीटीवी फुटेज से पुलिस को जो साक्ष्य मिले हैं उसके अनुसार इस हत्याकांड में तीन शूटर शामिल थे। एक शूटर गोपाल खेमका के घर के पास था तो एक शूटर बांकीपुर क्लब के पास था. वह लाइनर का काम कर रहा था। एक शूटर पूरे मामले पर नजर बनाए हुए था। तीनों फोन लाइन पर जुड़े हुए थे।

अबतक पुलिस को ठोस सबूत नहीं मिला

अभी तक पुलिस को इसका ठोस सबूत नहीं मिला है, लेकिन सीसीटीवी फुटेज में जो शूटर दिख रहे हैं उसके आधार पर ये लोग अजय वर्मा के आदमी माने जा रहे हैं। मुख्य शूटर का नाम विजय सहनी बताया जा रहा है। इसके साथ बिल्ला और शब्बीर भी था। हालांकि पुलिस अभी कुछ भी कहने से बच रही है।

पंजाब के होशियारपुर में भीषण सड़क हादसा

» यात्रियों से भरी बस पलटी आठ की मौत, 32 घायल

4पीएम न्यूज़ नेटवर्क

होशियारपुर। पंजाब के होशियारपुर के अतंर्गत दसूहा में एक दर्दनाक हादसा हुआ है। यहां यात्रियों से भरी एक बस अनियंत्रित होकर पलट गई। इस दुर्घटना में आठ लोगों की मौत हो गई। जबकि 32 से ज्यादा यात्री घायल हैं। यह बस हादसा दसूहा हाजीपुर रोड नजदीक सगरा अड्डा के पास हुआ है।

मुकेरियां के पुलिस उपाधीक्षक कुलविंदर सिंह विर्क ने बताया कि करीब 40 यात्रियों को लेकर बस हाजीपुर से दसूया जा रही थी, तभी चालक ने वाहन पर से नियंत्रण खो दिया। पुलिस ने बताया कि घायल यात्रियों को दसूया के सिविल अस्पताल में भर्ती कराया गया है। विर्क ने मुताबिक, दुर्घटना के कारणों का अभी पता नहीं चल पाया है और इसकी गहन जांच की जाएगी।

बस में सवार थे 40 लोग

हादसे की खबर मिलते ही पुलिस और प्रशासन के बड़े अधिकारी घटनास्थल पर पहुंचे हैं। मौके पर बचाव कार्य शुरू कर दिया गया। पुलिस ने बताया कि सोमवार को यहां सागरन गांव के पास एक मिनी बस पलट गई। इस दुर्घटना में आठ यात्रियों की मौत हो गई और 32 अन्य घायल हो गए।

कई सवारियों की हालत गंभीर

हालांकि, प्रारंभिक जानकारी में सामने आया कि बस की स्पीड काफी तेज थी, जिस कारण वाहन अनियंत्रित होकर पलट गया और यह हादसा हो गया। मौके पर स्थानीय लोग और पुलिस बचाव कार्य में जुटी है। घायलों को अस्पताल ले जाया गया है। कई लोगों की हालत गंभीर बनी हुई है।

पूरे देश में बारिश ने ढाया कहर पानी पानी हुए घर-शहर

एमपी के शहडोल में तीन हजार घरों में पानी घुसा

» राजस्थान, हिमाचल, उत्तराखंड में भारी तबाही

4पीएम न्यूज़ नेटवर्क

नई दिल्ली। देश के पूर्वी, पश्चिमी व उत्तरी भाग में भारी बारिश जारी है। उत्तरकाशी में यमुनोत्री हाईवे पर ओजरी इलाके में पुल बह जाने से आसपास के इलाकों का सड़क संपर्क टूट गया है। वहीं, श्रीनगर में तेज बारिश के बाद लैंडस्लाइड से बद्रीनाथ हाईवे बंद हो गया है।

मध्य प्रदेश के शहडोल में बीते 24 घंटे में 4 इंच बारिश हुई। आधी रात में 3 हजार से ज्यादा घरों में पानी भर गया। यहां अस्पताल में पानी भर जाने पर मरीजों को शिफ्ट करना पड़ा। रेलवे ट्रैक डूब जाने से 4 घंटे तक ट्रेन रूट बंद रहा। राजस्थान में भी तेज बारिश का दौर जारी है। झुंझुनूं में बाघोली नदी के तेज बहाव के चलते नेशनल हाईवे-52 को जोड़ने वाली सड़क धंस कर पानी में बह गई। सीकर में बारिश के कारण सड़कों पर पानी भर गया।

नाले उफान पर हैं। हिमाचल प्रदेश में 20 जून से 6 जुलाई के बीच बादल फटने की 19 घटनाएं हुईं। 23 बार बाढ़ और 19 बार लैंडस्लाइड हुए। 269 सड़कें बंद हैं। बारिश से जुड़े हादसों में अब तक 82 लोगों की जान जा चुकी है।

निषाद पार्टी बढ़ा सकती है बीजेपी की मुश्किलें

» दफ्तर के बाहर लगे पोस्टर

4पीएम न्यूज़ नेटवर्क

लखनऊ। उत्तर प्रदेश में 2027 विधानसभा चुनाव के पहले एनडीए की सहयोगी दल निषाद पार्टी में एक बार फिर से संबंधित जातियों के आरक्षण की मांग उठने लगी है। इसे लेकर निषाद पार्टी के दफ्तर के सामने पोस्टर लगाए गए हैं। जिसमें आरक्षण की मांग की गई है।

सरकार से की आरक्षण की मांग

इस मामले पर संजय निषाद ने कहा कि केवट ,मल्लाह, बिंद धैकवार, बाथम, मांझी, जातियों को पिछड़ी जातियों में आरक्षण खारिज कर मझवार आरक्षण देना होगा. उन्होंने कहा कि इस आरक्षण के न लागू होने के कारण इन जातियों ने 2024 में अपनी नाराजगी वोट के माध्यम से दिखाई जिस कारण भारतीय जनता पार्टी को बड़े नुकसान का सामना करना पड़ा था।

पार्टी के मुखिया और यूपी सरकार में कैबिनेट मंत्री संजय निषाद ने उम्मीद जताई है जल्द ही सरकार आरक्षण की मांग को पूरा करेगी। दरअसल निषाद पार्टी के मुखिया संजय निषाद अपने से संबंधित जातियों का ओबीसी से एससी में आरक्षण देने की मांग लंबे समय से उठा रहे हैं।

बीजेपी ने अलग-अलग समय पर वादा भी किया है लेकिन, लगभग भाजपा के साथ रहते हुए 6 साल का वक्त होने के बावजूद अभी तक की मांग पूरी नहीं हुई है। संजय निषाद ने कहा कि हम भारतीय जनता पार्टी के मित्र हैं और भाजपा अपने मित्रों का ख्याल रखती है इसलिए भाजपा यह आरक्षण 2027 चुनाव के पहले जारी करेगी। निषाद पार्टी के दफ्तर पर लगे पोस्टर के सवाल पर उन्होंने कहा कि उम्मीद है सरकार इस आरक्षण को जल्द जारी करेगी।

स्वामी 4 पीएम न्यूज नेटवर्क्स प्राइवेट लिमिटेड के लिए मुद्रक एवं प्रकाशक संजय शर्मा द्वारा आस्था प्रिंटर्स, 5/600, विकास खण्ड, गोमती नगर, लखनऊ-226010 (यूपी) से मुद्रित एवं 5/600, विकास खण्ड, गोमती नगर, लखनऊ-226010 (यूपी) से प्रकाशित। महाराष्ट्र कार्यालय :- 2 जी, कृष्णा कुटीर सागरिका CHS जुहू तारा रोड जुहू- मुंबई- 400049। संपादक - संजय शर्मा, विधि सलाहकार: सत्यप्रकाश श्रीवास्तव, मोहम्मद हैदर, वित्तीय सलाहकार: संदीप बंसल, कार्टूनिस्ट: हसन जैदी, दूरभाष: 0522- 4078371 | Email: daily4pm@gmail.com | website: www.4pm.co.in | RNI-UPHIN/2015/62233 डाक पंजी. सं- SSP/LW/NP-495/2018-2020 *इस अंक में प्रकाशित समस्त समाचारों के चयन एवं संपादन हेतु पी.आर.बी. एक्ट के अंतर्गत उत्तरदायी। समस्त विवाद लखनऊ न्यायालय के अधीन ही होंगे।